Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا ثُمَّ نَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ اَشْرَكُوْٓا اَيْنَ شُرَكَآؤُكُمُ الَّذِيْنَ كُنْتُمْ تَزْعُمُوْنَ

(अल् ईनाम :23)

अनुवाद : और (याद करो) जिस दिन हम इन सबको इकट्ठा करेंगे फिर हम उन्हें, जिन्होंने शिर्क किया, पूछेंगे कि तुम्हारे वे शरीक कहाँ हैं जिन्हें तुम (शरीक) ठहराया करते थे।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ   نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ   وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष- 7
अंक- 7

मूल्य 575 रुपए वार्षिक

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

15 रजब 1443 हिज्री कमरी, 17 तब्लीग़ 1401 हिज्री शम्सी, 17 फ़रवरी 2022 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़ज़ल नाज़िल करता रहे। आमीन

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वाणी

मदीना हरम (पवित्र) है

(1867) हज़रत अंस रज़ियल्लाहु अन्हो से मर्वी है कि उन्होंने नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से रिवायत की। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: मदीना हर्म (पवित्र) है। यहां से लेकर वहां तक उसका दरख़्त न काटा जाए और न इस में कोई बिद्दत की जाए। जिसने इस में कोई बिद्दत की, उस पर अल्लाह तआला और फ़रिश्तों और सब लोगों की लानत हो।

(1868) हज़रत अंस रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मदीना में आए और मस्जिद बनाने का हुक्म दिया और फ़रमाया : बनी नज्जार! मुझसे (उस जगह की क़ीमत) ठहरा लो। तो उन्होंने कहा : हम उसकी क़ीमत नहीं लेंगे परन्तु अल्लाह तआला से । तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मुशरिकों की क़ब्रों के सम्बन्ध में फ़रमाया और वे खोद कर हड्डियां इत्यादि निकाली गईं फिर खन्डरात की निसबत फ़रमाया जो बराबर किए गए और खजूर के दरख़्तों से सम्बंधित फ़रमाया जो काटे गए और मस्जिद के आख़िरी हद में इन ख़जूरों के तने तर्तीब से रख लिए गए।

(बुख़ारी, भाग 3 किताब फ़ज़ायल अल् मदीना, मुद्रित 2008 ई.)

जब आदमी لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ कहता है तो सब उसकी नज़रों में तुच्छ हो जाते हैं और वह बहादुरी के साथ काम करता है

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उपदेश

फ़रमाया : "यह जो रात-दिन मुस्लमानों को कलमा तय्यबा कहने के वास्ते ताईद और ताकीद है। इसकी वजह यही है कि बग़ैर इसके कोई बहादुरी पैदा नहींहो सकती। जब आदमी لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ कहता है तो समस्त इन्सानों और चीज़ों और हाकिमों और अफ़्सिरों और दुश्मनों और दोस्तों की क़ुव्वत और ताक़त तुच्छ हो कर इन्सान केवल अल्लाह को देखता है और उसके अतिरिक्त सब उसकी नज़रों में तुच्छ हो जाते हैं। अतः वह शुजाअत और बहादुरी के साथ काम करता है और कोई डराने वाला उसको डरा नहीं सकता।"

फ़िरासत (दूरदर्शिता)

फ़रमाया "फ़िरासत भी एक चीज़ है। जैसा कि उस यहूदी ने देखते ही हज़रत रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को कह दिया कि मैं उनमें नबुव्वत के निशान पाता हूँ और ऐसा ही मुबाहला के वक़्त ईसाई हज़रत रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुक़ाबिल पर न आए, क्योंकि उनके मुशीर ने उनको कह दिया था कि मैं ऐसे मुँह देखता हूँ कि अगर वे कहें पहाड़ से कहेंगे कि यहां से टल जा, तो वो टल जाएगा।"

फ़रमाया : "अगर किसी के बातिन में कोई हिस्सा रूहानियत का है, तो वह मुझको क़बूल कर लेगा

किताब तालीम लिखने की ख़्वाहिश

फ़रमाया : "मैं चाहता हूँ कि एक किताब तालीम की लिखूँ और मौलवी मुहम्मद अली साहिब उसका अनुवाद करें। इस किताब के तीन हिस्से होंगे : एक यह कि अल्लाह तआला के हुज़ूर में हमारे क्या कर्तव्य हैं और दूसरा यह कि अपने नफ़्स के क्या-क्या हुक़ूक़ हम पर हैं और तीसरा यह कि मानव जाति के हम पर क्या क्या हुक़ूक़ हैं।"

औलिया की किरामात

फ़रमाया "ज़माना-ए-नबुव्वत तो نُوْرٌ عَلٰی نُوْرٍ था और एक सूर्य था लेकिन इस के बाद के औलिया के जो ख़्वारिक़ और किरामात बतलाए जाते हैं वे अपने साथ इन्किशाफ़ात नहीं रखते और उनकी तारीख़ का सही पता नहीं लग सकता, इसलिए शेख़ अब्दुल क़ादिर जिलानी रज़ियल्लाहु अन्हु के किरामात उनके दो सौ साल बाद लिखे गए और अतिरिक्त उसके उन लोगों को यह अवसर दुश्मन के समक्ष नहीं मिला और न उनको ऐसा उपद्रव पेश आया जैसा कि हमको।" (मलफ़ूज़ात, भाग प्रथम, सफ़ा 354 मुद्रित 2018 क़ादियान)

जिनको तुम पूजते हो वे सब फ़ौत हो चुके हैं फिर वे हादी किस तरह हो सकते हैं ख़ालिक़ होने के अतिरिक्त हिदायत देने वाले वजूद के लिए ज़िंदा होना भी ज़रूरी है ताकि जब कोई ख़राबी हो वह उसकी इस्लाह कर सके

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो सूरः नहल आयत 2, 22

وَالَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ لَا يَخْلُقُوْنَ شَيْـًٔا وَّهُمْ يُخْلَقُوْنَ ○ اَمْوَاتٌ غَيْرُ اَحْيَآءٍ ۚ وَمَا يَشْعُرُوْنَ اَيَّانَ يُبْعَثُوْنَ ○

की तफ़सीर में फ़रमाते हैं :

परोक्ष की ख़बर ख़ालिक़ होने के बग़ैर हासिल नहीं हो सकता। जो ख़ालिक़ है वही अपनी मख़लूक़ के अंदर की ताक़तों और उसके कार्यों से आगाह हो सकता है दूसरा अवगत नहीं हो सकता और अगर वाक़िफ़ हो तो वैसा ही ख़ालिक़ वह भी हो जाए परन्तु जिनको तुम माबूद मानते हो वह तो ख़ालिक़ नहीं बल्कि सबके सब ख़ुद मख़लूक़ हैं।

इस आयत से किस सुंदर रूप में ख़ुदा तआला के अतिरिक्त सब अन्य हस्तियों के परोक्ष की ख़बर जानने के दावा का खंडन किया गया है परन्तु आश्चर्य है कि मुस्लमानों में इस शिक्षा की मौजूदगी में एक वर्ग ऐसा मौजूद है जो यह ख़्याल करता है कि हज़रत-ए-ईसा अलैहिस्सलाम को परोक्ष की ख़बर भी थी और वह परिंदे भी पैदा किया करते थे। हालाँकि अल्लाह तआला उस जगह साफ़ फ़रमाता है कि जिस क़दर वजूदों की अल्लाह तआला के अतिरिक्त पूजा की जाती है उनमें से एक भी किसी चीज़ के पैदा करने पर क़ादिर नहीं और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ही के वजूदों में से हैं जिनकी लाखों करोड़ों इन्सान पूजा करते हैं।

ख़ालिक़ होने के अतिरिक्त हिदायत देने वाले वजूद के लिए ज़िंदा होना भी ज़रूरी है ताकि जब कोई ख़राबी हो वे उसकी इस्लाह कर सके। इस दलील से झूठे उपस्यों के हिदायत देने के योग्य होने से इन्कार किया और फ़रमाया कि जिन को तुम पूजते हो सब फ़ौत हो चुके हैं फिर वे हादी किस तरह हो सकते हैं। अगर इस ज़माना में ख़राबी पैदा हो तो वह उसे किस तरह दूर करेंगे। आशचर्य है कि मुस्लमानों में इस इरशाद के ख़िलाफ़ भी अक़ीदा पैदा हो रहा है और एक बड़ी जमाअत हज़रत ईसा को ज़िंदा मान रही है। हालाँकि अल्लाह तआला फ़रमाता है कि जिस क़दर झूठे माबूद क़ुरआन-ए-मजीद के ज़माना में थे वे सब फ़ौत हो चुके थे। अतः चूँकि ईसाई हज़रत ईसा को माबूद मानते थे इस इलाही शहादत के अधीन वे क़ुरआन-ए-करीम के नुज़ूल से पहले फ़ौत हो चुके थे और अगर उन्हें ज़िंदा स्वीकार किया जाए तो मानना पड़ेगा कि वह नऊज़ूबिल्लाह (हम इससे ख़ुदा की शरण चाहते हैं) झूठे माबूदों में से नहीं थे बल्कि वास्तव में ख़ुदा थे। नऊज़ूबिल्लाह (हम इससे ख़ुदा की शरण चाहते हैं)। इन दोनों आयात में शिर्क का खंडन भी अत्यधिक ज़बरदस्त प्रमाणों से किया गया है और इसके लिए चार दलायल हैं :

(1) لَا يَخْلُقُوْنَ वे पैदा नहीं करते, शेष पृष्ठ12 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

अहमदियत के मर्कज़ क़ादियान दारुल आमान में 126वें जलसा सालाना का सफ़ल और बाबरकत आयोजन

कोविड की महामारी ने दिलों के मेल दूर नहीं किए, अल्लाह तआला की इस वार्निंग से इन्सान कोई सबक़ हासिल नहीं कर रहा, अगर यही तरीक रहा तो बड़े ख़तरनाक परिणाम पैदा होंगे

आज मैं इस्लाम की अमन की शिक्षा के चंद पहलू वर्णन करूँगा अगर उन पर अमल हो तो दुनिया अमन और सलामती का गहवारा बन सकती है

इस्लाम कहता है कि एक दूसरे के मज़हब के संस्थापकों को ग़लत कह कर उस पर आरोप न लगाओ

इस्लाम यह नहीं कहता है कि बाक़ी मज़हब झूठे थे, इस्लाम कहता है कि हर क़ौम में नबी आए, क़ुरआन-ए-करीम की आयत وَاِنۡ مِّنۡ اُمَّۃٍ اِلَّا خَلَا فِیۡہَا نَذِیۡرٌ ○ की रोशनी में एक मुस्लमान हज़रत-ए-ईसा को हज़रत मूसा को या हिंदूओं के अवतारों को इज़्ज़त की निगाह से देखेंगे

इस्लाम कहता है कि हर मज़हब के मानने वाले की इज़्ज़त करो और हर मज़हब के संस्थापक की इज़्ज़त करो

इस्लाम के बारे में एक ग़लत तसव्वुर क़ायम किया गया है कि इस्लाम शिद्दत-पसंद मज़हब है और इबतिदा में ज़बरदस्ती मुस्लमान बनाए गए हालाँकि इस्लाम इसकी नफ़ी करता है

इस्लाम ने इस दुनिया में न मानने की वजह से किसी को सज़ा नहीं दी,अगर आज भी मुस्लमानों के अमल इस शिक्षा के अनुसार हो जाएं तो दुनिया की इस्लाम की तरफ़ तवज्जा पैदा हो जाए

इस्लाह मद्द-ए-नज़र होनी चाहिए, देखना चाहिए कि क्या सज़ा देने से इस्लाह होती है या माफ़ करने से, उद्देश्य इस्लाह होनी चाहिए

इस्लाम कहता है कि हर किस्म के लेन-देन में दूसरे के हुक़ूक़ का ख़्याल रखो

इस्लाम कहता है धमंड न करो, लोगों को ज़लील, हक़ीर न समझो, घमंड करके कोई वास्तविक स्थान नहीं मिलता

विनम्रता ही है जो वास्तविक सरदारी देती है, यही सरदारी है जो हमेशा अमन क़ायम करने वाली बन सकती है

जलसे की बरकात को भी शामिल होने वाले साथ लेकर जाने वाले हों, दुनिया में हर जगह इस जलसे के प्रोग्राम को सुनने वाले एक जोश और जज़्बा अपने अंदर पैदा करने वाले हो और अपने इलाक़ों में इस्लाम की पाक शिक्षा की रोशनी में एक इन्क़िलाब पैदा करने वाले बन जाएं

मुस्लिम टेलीविज़न अहमदिया इंटरनैशनल के माध्यम से सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमोमेनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का जलसे में शामिल होने वालों से बसीरत अफ़रोज़ समापनिय भाषण

कोविड के हालात की वजह से हज़ूर अनवर की मार्गदर्शन और हुकूमती गाइड लाइन के अधीन सीमित पैमाने पर जलसे का आयोजन लेकिन लाईव इस्ट्रियमिंग के माध्यम से जलसा से वसीअ लाभ * लाईव एस्ट्रियमिंग के माध्यम से एक लाख, छः हज़ार, छः सौ छयालीस लोगों ने जलसे की कार्रवाई देखी सुनी * 8 देशों की नुमाइंदगी* नमाज़ तहज्जुद* दर्सुल क़ुरआन और ख़ुदा का ज़िक्र इलाही से परिपूर्ण माहौल * उल्मा किराम के ज्ञान से परिपूर्ण भाषण * 6 मुल्की भाषों में जलसा के प्रोग्रामों का अनुवाद * अहबाब जमाअत की मालूमात में बढ़ोतरी के लिए तर्बीयती उमूर पर मुश्तमिल वृत्तचित्र और मुख़्तलिफ़ मालूमाती नुमाइशों का आयोजन * निकाहों के ऐलानात * प्रिंट और इलैक्ट्रॉनिक मीडीया में जलसे की कवरेज * पुरसुकून और ख़ुशगवार मौसम में जलसे की समस्त कार्रवाई की तकमील*

(भाग प्रथम) रिपोर्ट : मंसूर अहमद मसरूर (मुंतज़िम रिपोर्टिंग)

अलहमदु लिल्लाह कि जलसा सालाना क़ादियान बुस्तान-ए-अहमद के बड़े क्षेत्र में तिथि 24,25,26 दिसंबर 2021 दिन शुक्रवार, शनिवार, रविवार आयोजित हो कर सुख और शांति के साथ समाप्त हुआ। कोविड के मौजूदा हालात के पेश-ए-नज़र हज़ूर अनवर की मार्गदर्शन और आदेशों की रोशनी में क़ादियान आकर जलसा सुनने वालों की हाज़िरी जबकि कि सीमित थी लेकिन लाईव एस्ट्रियमिंग के माध्यम से पूरे भारत के अहमदियों ने इस जलसे से ख़ूब लाभ प्राप्त किया बल्कि बाहर के देशों से भी जलसा सालाना क़ादियान देखा और सुना गया। इस तरह अल्लाह तआला ने मुश्किल हालात में भी हमारे लिए नए रास्ते तब्लीग़ के मुहय्या कर दिए। दो वर्ष के अन्तराल के बाद हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के विशेष मार्गदर्शन और दुआओं की बदौलत जलसा का आयोजन सम्भव हो सका जिस ने दिसंबर के महीने में क़ादियान दारुल अमान की बस्ती को एक-बार फिर ख़ुशियों और रौनक़ों से भर दिया। और एक बार फिर क़ादियान के रहने वालों ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मेहमानों की आमद और उनके स्वागत की ख़ुशी में अपने अपने घरों और मोहल्लों और गली कूचों की सफ़ाई की और हर एक ने अपने अपने रंग में जलसे की तैयारी की। इजतिमाई वक़ार-ए-अमल के माध्यम से पूरे क़ादियान को साफ़ सुथरा किया गया। जलसे से कुछ दिन पहले ही निज़ामत बिजली और रौशनी की तरफ़ से मोहल्ले की समस्त गलियों और सड़कों को टयूब लाइट्स के माध्यम से रोशन कर दिया गया। बहिश्ती मक़बरा, दारुल मसीह , मस्जिद मुबारक , मस्जिद अक्सा और मिनारतुल मसीह को बिजली के छोटे छोटे रंगीन बल्बों से दुल्हन की तरह सजाया गया। इस तरह मसीह मौऊद-ओ-महदी माहूद अलैहिस्सलाम की यह रुहानी बस्ती अपनी बातिनी जगमगाहट के साथ साथ ज़ाहिरी तौर पर भी जगमगा उठी।

मुआइना कारकुनान (कर्मचारियों का निरीक्षण) और जलसे की व्यवस्था तिथि 21 दिसंबर 2021 दिन मंगल तक़रीबन पौने ग्यारह बजे जलसा गाह बुस्ताने अहमद में प्रतिनिधि हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ माननीय मौलाना मुहम्मद इनाम ग़ौरी साहिब की सदारत में मुआइना कारकुनान की तक़रीब अमल में आई। नुमाइंद्दा हुज़ूर अनवर जूंही बुस्तान-ए-अहमद में तशरीफ़ लाए उनका اَھْلًا وَّسَھْلًا وَّمَرْحَبًا كَ के नारों से स्वागत किया गया। आपने सब से पहले जलसा सालाना के विभागों के बैनर तले खड़े मुंतज़मीन-ओ-नाज़िमीन और सेवकों से मुलाक़ात की बाद आयोजन की कार्रवाई तिलावत क़ुरआन-ए-करीम से शुरू हुई जो प्रिय लुक़्मान अहमद तक़ी ने की और अनुवाद पेश किया। इसके बाद नुमाइंदा हुज़ूर अनवर ने ख़िताब फ़रमाया। आपने फ़रमाया अलहमदु लिल्लाह, दो वर्ष के बाद अल्लाह तआला के फ़ज़्ल-ओ-करम से जलसा सालाना क़ादियान का आयोजन अमल में आ रहा है। जबकि इस जलसा में जस्मानी तौर पर हाज़िरी सीमित होगी

शेष पृष्ठ10 पर

ख़ुत्बः जुमअः

कभी ऐसा भी होता कि राह गुज़रते हुए कई दूसरे क़ाफ़िले वाले जो कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को उनके अक्सर व्यापारिक यात्राओं की वजह से उन्ही जगहों पर देख चुके थे,

पूछते कि आप रज़ियल्लाहु अन्हो के साथ यह कौन है? तो आप रज़ियल्लाहु अन्हो कहा देते कि ... هٰذَا الرَّجُلُ يَهْدِيْنِي السَّبِيْلَ यह व्यक्ति मुझे रास्ते की तरफ़ हिदायत देने वाला है

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के महान ख़लीफ़ा राशिद सिद्दीक़-ए-अकबर हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो की विशेषताएं और गुण

आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उसे फ़रमाया। सुराक़ा उस वक़्त तेरा क्या हाल होगा जब तेरे हाथों में किसरा के कंगन होंगे? सुराक़ा ने हैरान हो कर पूछा। किसरा बिन हुरमज़ शहनशाह-ए-ईरान?

आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया हाँ। सुराक़ा की आँखें खुली की खुली रह गईं। कहाँ अरब के रेगिस्तान का एक बदवी और कहाँ किसरा शहनशाह-ए-ईरान के कंगन। परन्तु ख़ुदा का तमाशा देखो कि

जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के ज़माना में ईरान फ़तह हुआ और किसरा का ख़ज़ाना प्राप्त धन में मुस्लमानों के हाथ आया तो किसरा के कंगन भी उस के धन के साथ मदीना में आए।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने सुराक़ा को बुलाया जो फ़तह मक्का के बाद मुस्लमान हो चुका था और अपने सामने उसके हाथों में किसरा के कंगन जो बेशक़ीमत जवाहरात से लदे हुए थे पहनाए

आठ दिन सफ़र करते हुए ख़ुदाई नुसरतों के साथ अंतत सोमवार के दिन आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मदीना के रास्ते क़ुबा पहुंच गए, हदीस में है कि सोमवार के दिन आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का जन्म हुआ

सोमवार के दिन मक्का से निकले और सोमवार के दिन मदीना पहुंचे और सोमवार के दिन आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वफ़ात हुई

जब सुबह हुई तो बुरयदा ने कहा हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! मदीना में आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का दाख़िला एक झंडे के साथ होना चाहिए,

फिर उसने अपना इमामा सिर से उतारा और उसे अपने नेज़े पर बांध दिया और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के आगे आगे चलने लगा यहां तक कि मुस्लमान मदीना में दाख़िल हो गए

दुआ करें बाक़ी कैदियों के बारे में भी अल्लाह तआला उनकी रिहाई के सामान पैदा फ़रमाए

श्रीमान चौधरी असग़र अली कलार साहिब मरहूम ख़ुदा के मार्ग में कैद, श्रीमान मिर्ज़ा मुमताज़ अहमद साहिब कारकुन वकालत उल्या रब्वाह और श्रीमान कर्नल रिटायर्ड डाक्टर अब्दुल ख़ालिक़ साहिब साबिक़ ऐडमिनिस्ट्रेटर फ़ज़ल-ए-उमर हस्पताल का वर्णन और नमाज़-ए-जनाज़ा ग़ायब

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 14 जनवरी 2022 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

पिछले से पहले ख़ुतबा में हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो का वर्णन हो रहा था । इस में सुराक़ा का यह वर्णन हुआ था कि वह भी इनाम के लालच में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को पकड़ने की नीयत से निकला था लेकिन जब अल्लाह तआला की तक़दीर ने इसके आगे रोकें खड़ी कर दें तो उसने उस वक़्त आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से निवेदन किया कि जब आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हुकूमत हो तो मुझे अमान दी जाए और एक तहरीर लिखवाई। उस ज़िमन में कुछ रिवायात हैं। एक रिवायत के अनुसार उस के वापस लौटते हुए नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसे सम्बोधित करते हुए फ़रमाया सुराक़ा! तेरा क्या हाल होगा जब किसरा के कंगन तेरे हाथ में होंगे। सुराक़ा आश्चर्यचकित हो कर पल्टा और कहा कि किसरा बिन हुर्मुज़?

आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया हाँ वही किसरा बिन हुरमज़। इसलिए जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के ज़माना ख़िलाफ़त में किसरा के कंगन और उसका ताज और इस का कमर बंद लाया गया तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने सुराक़ा को बुलाया फ़रमाया : अपने हाथ बुलंद करो और उन्हें कंगन पहनाए और फ़रमाया कि कहो समस्त प्रशंसा अल्लाह तआला के लिए हैं जिसने किसरा बिन हुर्मुज़ से ये दोनों छीन कर अता कीं।

(محمد رسول اللہ والذین معہ لعبد الحمید جودۃ السحار, भाग 3 पृष्ठ 65 अल् हिजरत, प्रकाशन मिस्र)

यह भी वर्णन मिलता है कि हिजरत की यात्रा के वक़्त नहीं बल्कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हुनैन और ताइफ से वापस तशरीफ़ ला रहे थे तो सुराक़ा बिन मालिक ने जेराना के स्थान पर इस्लाम क़बूल किया। और जेराना मक्का और तायफ के रास्ते पर मक्का के क़रीब एक कुँवें का नाम है। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने सुराक़ा से फ़रमाया तुम्हारा उस वक़्त क्या हाल होगा जब तुम किसरा के कंगन पहनोगे।

(बुख़ारी बा शराह अल् किरमानी, भाग 14 पृष्ठ 178 किताब بدء الخلق باب علامات النبوۃ فی الاسلام,,दारुल अहया तुर्रास अल् अरबी बेरुत)(फ़र्हंग सीरत, पृष्ठ 88 ज़वार एकेडेमी कराची 2003 ई.)

इस बारे में सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस तरह लिखा है कि "अभी आप थोड़ी ही दूर गए थे कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने देखा कि एक व्यक्ति घोड़ा दौड़ाए उनके पीछे आ रहा है। इस पर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने घबरा

कर कहा। हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! कोई व्यक्ति हमारा पीछा कर रहा है। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया। कोई फ़िक्र न करो, अल्लाह हमारे साथ है। यह पीछा करने वाला सुराक़ा बिन मालिक था जो अपने पीछा करने का क़िस्सा ख़ुद अपने शब्दों में इस प्रकार वर्णन करता है कि जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मक्का से निकल गए तो कुफ़्फ़ार-ए-क़ुरैश ने यह ऐलान किया कि जो कोई भी मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) या अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को ज़िंदा या मुर्दा पकड़ कर लाएगा उसे इस इस क़दर इनाम दिया जाएगा और इस ऐलान की उन्होंने अपने पैग़ाम देने वालों के माध्यम से हमें भी इत्तिला दी।" यह सुराक़ा कहता है। "इसके बाद एक दिन मैं अपनी क़ौम बनू मुद्लिज की एक मज्लिस में बैठा हुआ था कि क़ुरैश के इन आदमियों में से एक व्यक्ति हमारे पास आया और मुझे सम्बोधित करके कहने लगा कि मैं ने अभी अभी समुंद्र के किनारे की सिम्त में दूर से कुछ शक्लें देखी हैं। मैं समझता हूँ कि शायद वे मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) और उसके साथी होंगे। सुराक़ा कहता है कि मैं फ़ौरन समझ गया कि ज़रूर वही होंगे।

फिर हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु ने वही तफ़सील वर्णन की है जो सुराक़ा के पीछा के वक़्त और ज्योतिष की भविष्यवाणी उस के ख़िलाफ़ निकलने और उसके घोड़े के धँसने के बारे में वर्णन हो चुकी है। बहरहाल सुराक़ा कहता है "...... उस पूर्व की वजह से जो मेरे साथ गुज़री थी मैंने ये समझा कि इस व्यक्ति का सितारा बुलंदी पर है और यह कि अंतत आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ग़ालिब रहेंगे। इसलिए मैंने सुलह के रंग में उनसे कहा कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की क़ौम ने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को क़तल करने या पकड़ लाने के लिए इस इस क़दर इनाम निर्धारित कर रखा है और लोग आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सम्बन्ध में ये ये इरादा रखते हैं और मैं भी इसी इरादे से आया था परन्तु अब मैं वापस हूँ।'' और फिर सुराक़ा की जो बाक़ी तफ़सील वर्णन हुई है। इसके बाद सुराक़ा के कंगन पहनने की भविष्यवाणी का वर्णन करते हुए हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु इस तरह लिखते हैं कि "जब सुराक़ा वापस लौटने लगा तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उसे फ़रमाया। सुराक़ा उस वक़्त तेरा क्या हाल होगा जब तेरे हाथों में किसरा के कंगन होंगे? सुराक़ा ने हैरान हो कर पूछा : किसरा बिन हुर्मुज़ शहनशाह-ए-ईरान? आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया हाँ। सुराक़ा की आँखें खुली की खुली रह गईं। कहाँ अरब के सहरा का एक बदवी और कहाँ किसरा शहनशाह-ए-ईरान के कंगन। परन्तु क़ुदरत-ए-हक़ का तमाशा देखो कि जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के ज़माने में ईरान फ़तह हुआ और किसरा का ख़ज़ाना ग़नीमत में मुस्लमानों के हाथ आया तो किसरा के कंगन भी ग़नीमत के माल के साथ मदीना में आए। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने सुराक़ा को बुलाया जो फ़तह मक्का के बाद मुस्लमान हो चुका था और अपने सामने उसके हाथों में किसरा के कंगन जो बेशक़ीमत जवाहरात से लदे हुए पहनाए।'' (सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, पृष्ठ 240 से 242)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो इस वाक़िया का वर्णन करते हुए यूं फ़रमाते हैं कि "उन्होंने'' अर्थात मक्का वालों ने "ऐलान कर दिया कि जो कोई मुहम्मद (रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) या अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को ज़िंदा या मुर्दा वापस ले आएगा उसको सौ ऊंटनी इनाम दिया जाएगा और इस ऐलान की ख़बर मक्का के इर्द गिर्द के क़बायल को भिजवा दी गई। इसलिए" इस वक़्त "सुराक़ा बिन मालिक एक बदवी रईस इस इनाम के लालच में आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पीछे रवाना हुआ। तलाश करते करते उसने मदीना की सड़क पर आप को जालिया। जब उसने दो ऊंटनियों और उनके सवारों को देखा और समझ लिया कि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और उनके साथी हैं तो उसने अपना घोड़ा उनके पीछे दौड़ा दिया।"

फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने वह सारा वाक़िया वर्णन किया है जो सुराक़ा के घोड़े का ठोकर खा कर गिरने का और ज्योतिष की भविष्यवाणी करने का था। फिर आप कहते हैं। सुराक़ा कहता है कि "रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम वक़ार के साथ अपनी ऊंटनी पर सवार चले जा रहे थे। उन्होंने मुड़ कर मुझे नहीं देखा लेकिन अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो (इस डर से कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को कोई हानी पहुंचे) बार-बार मुँह फेर कर मुझे देखते थे।"

इस पीछा करने के वाक़िया की तफ़सील वर्णन करने के बाद हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु लखते हैं कि "जब सुराक़ा लौटने लगा तो साथ ही अल्लाह तआला ने सुराक़ा के भविष्य के हालात आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर प्रकट फ़र्मा दिए और उनके अनुसार आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उसे फ़रमाया सुराक़ा! उस वक़्त तेरा क्या हाल होगा जब तेरे हाथों में किसरा के कंगन होंगे। सुराक़ा ने हैरान हो कर पूछा किसरा बिन हुरमज़ शहनशाह-ए-ईरान के कंगन? आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया हाँ आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की यह भविष्यवाणी कोई सोला सतरह वर्षों के बाद जा कर शब्द शब्द पूरी हुई। सुराक़ा मुस्लमान हो कर मदीना आ गया। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात के बाद पहले हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो फिर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ख़लीफ़ा हुए। इस्लाम की बढ़ती हुई शान को देखकर ईरानियों ने मुस्लमानों पर हमले शुरू कर दिए और बजाय इस्लाम को कुचलने के ख़ुद इस्लाम के मुक़ाबला में कुचले गए। किसरा का दारुल इमारत इस्लामी फ़ौजों के घोड़ों की टापों से कुचला गया और ईरान के खज़ाने मुस्लमानों के क़बज़ा में आए। जो माल इस ईरानी हुकूमत का इस्लामी फ़ौजों के क़बज़ा में आया इस में वे कड़े भी थे जो किसरा ईरानी दस्तूर के अनुसार तख़्त पर बैठते वक़्त पहना करता था। सुराक़ा मुस्लमान होने के बाद अपने इस वाक़िया को जो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हिज्रत के वक़्त उसे पेश आया मुस्लमानों को अत्यधिक फ़ख़र के साथ सुनाया करता था और मुस्लमान इस बात से आगाह थे कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसे सम्बोधित करके फ़रमाया था सुराक़ा! उस वक़्त तेरा क्या हाल होगा जब तेरे हाथ में किसरा के कंगन होंगे। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के सामने जब विजय के बाद का धन ला कर रखे गए और उनमें उन्होंने किसरा के कंगन देखे तो सब नक़्शा आपकी आँखों के सामने फिर गया। वह कमज़ोरी और ज़ोफ़ का वक़्त जब ख़ुदा के रसूल को अपना वतन छोड़ कर मदीना आना पड़ा था। वह सुराक़ा और दूसरे आदमियों का आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पीछे इस लिए घोड़े दौड़ाना कि आप को मार कर या ज़िंदा किसी सूरत में भी मक्का वालों तक पहुंचा दें तो वह सौ ऊंटों के मालिक हो जाऐंगे और उस वक़्त आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का सुराक़ा से कहना। सुराक़ा उस वक़्त तेरा क्या हाल होगा जब तेरे हाथों में किसरा के कंगन होंगे। कितनी बड़ी भविष्यवाणी थी। कितनी स्पष्ट भविष्यवाणी थी। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने अपने सामने किसरा के कंगन देखे तो ख़ुदा की क़ुदरत उनकी आँखों के सामने फिर गई। उन्होंने कहा सुराक़ा को बुलाओ। सुराक़ा बुलाए गए तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने उन्हें हुक्म दिया कि वह किसरा के कंगन अपने हाथों में पहनें। सुराक़ा ने कहा हे ख़ुदा के रसूल ख़लीफ़ा! सोना पहनना तो मुस्लमानों के लिए मना है। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया हाँ मना है परन्तु इन अवसरों के लिए नहीं। अल्लाह तआला ने मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को तुम्हारे हाथ में सोने के कंगन दिखाए थे या तो तुम ये कंगन पहनोगे या मैं तुम्हें सज़ा दूँगा। सुराक़ा का एतराज़ तो केवल शरीयत के मसला की वजह से था अन्यथा वह ख़ुद भी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणी को पूरा होते देखने का ख़ाहिशमंद था। सुराक़ा ने वे कंगन अपने हाथ में पहन लिए और मुस्लमानों ने इस अज़ीमुश्शान भविष्यवाणी को पूरा होते हुए अपनी आँखों से देखा।"

(दीबाचा तफ़सीरुल क़ुरआन, अनवारुल उलूम, भाग 20 पृष्ठ 224 से 226)

फिर वर्णन आता है कि वापसी पर एक क़ाफ़िले ने जो क़ुरैश ने ही आपकी तलाश में भेजा था सुराक़ा से आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के क़ाफ़िले के सम्बन्ध में पूछा लेकिन सुराक़ा ने न सिर्फ यह कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के क़ाफ़िले के बारे में कुछ नहीं बताया बल्कि इस तरह की बात चीत की कि पीछा करने वाले वापस लौट गए। (उद्धरित सब्बलुलहुदा वल रिशाद, भाग 3 पृष्ठ 249 جماع ابواب الهجرة الى المدينة... दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरुत 1993 ई.)

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 103 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

इस हिजरत की यात्रा में उम्मे माबद का एक वाक़िया है जिसका वर्णन मिलता है। हिज्रत के इस सफ़र के दौरान एक ख़ेमे के पास से गुज़रते हुए ज़ाद-ए-राह की तलब में नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का यह क़ाफ़िला रुका। यह उम्मे माबद का ख़ेमा था। उम्मे माबद का नाम आतिका पुत्री ख़ालिद था। उनका सम्बन्ध ख़ुज़ाह की शाख़ बनू काब से था। यह हज़रत हुबेश बिन ख़ालिद की बहन थीं जिन्हें सहाबी होने और रिवायत करने का सौभाग्य हासिल हुआ। उम्मे माबद के पति का नाम अबू माबद था। कहा जाता है कि उन्होंने भी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से रिवायत की है। उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़िंदगी में वफ़ात पाई। अबू माबद का नाम मालूम नहीं। उम्मे माबद का ख़ेमा क़ुदेद स्थान पर था। क़ुदेद मक्का के क़रीब एक क़स्बा का नाम है जो राबे से कुछ मील की दूरी पर दक्षिण में वाक़्य था। यहीं पर मशहूर बुत मनात बना था। अहल-ए-मदीना उसकी उपासना किया करते थे। (अलरोज़ अल् निस्फ़, भाग 2, पृष्ठ 325 نسب اُمّ مَعْبَد و زوجھا,,मुद्रित दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत)(फ़र्हंग सीरत, पृष्ठ 232)

उम्मे माबद एक बहादुर और मज़बूत महिला थीं। वह अपने ख़ेमे के सेहन में बैठी रहतीं और वहां से गुज़रने वालों को खिलाते पिलातें। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और आपके साथियों ने इस से गोश्त और ख़जूरों के सम्बन्ध में पूछा ताकि यह इस से ख़रीद सकें लेकिन इस के पास उनमें से कोई चीज़ नहीं थी। उस वक़्त उम्मे माबद की क़ौम ज़रूरतमंद और सूखे से गुज़र रही थी। उम्मे माबद ने कहा अगर हमारे पास कुछ होता तो हम तुम लोगों से उसे दूर नहीं रखते। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़ेमे के एक कोने में बकरी नज़र आई तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने पूछा हे माबद! यह बकरी कैसी है? उसने अर्ज़ किया कि यह एक ऐसी बकरी है कि जिसे कमज़ोरी ने रेवड़ से पीछे रखा हुआ है। अर्थात इस में इतनी ताक़त भी नहीं है कि रेवड़ के साथ बाहर चरने जा सके। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : क्या उस में दूध है? उसने कहा यह इस से कहीं ज़्यादा कमज़ोर है। यह तो मुम्किन ही नहीं कि इस में दूध हो। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पूछा क्या तुम मुझे इजाज़त देती हो कि मैं इस का दूध निकाल लूं? उसने कहा कि अगर आप को इस में दूध दिखाई दे रहा है तो ज़रूर निकाल लें मुझे कोई एतराज़ नहीं। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने वह बकरी मँगवाई और इस के थन पर हाथ फेरा और अल्लाह का नाम लिया और उम्मे माबद उस की बकरी में बरकत की दुआ की। बकरी आपके सामने आराम से खड़ी हो गई और उसने ख़ूब दूध उतारा और जुगाली शुरू कर दी। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उनसे एक बर्तन मंगवाया जो एक जमाअत का पेट भर सकता था। इस में इतना दूध दोहा कि झाग उस के ऊपर तक आ गई। फिर उम्मे माबद पिलाया यहां तक कि वह सैर हो गईं। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपने साथियों को पिलाया यहां तक कि वे भी सैर हो गए। इन सब के आख़िर में आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने ख़ुद नोश किया फ़रमाया : क़ौम को पिलाने वाला आख़िर में पीता है। फिर कुछ वक़्फ़ा के बाद आपने इस बर्तन में दुबारा दूध दोहा यहां तक कि वह भर गया और उसे उम्मे माबद के पास छोड़ दिया। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने वह बिक्री ख़रीदी और सफ़र के लिए निकल पड़े।

(सब्लुल हुदा वर्रिशाद भाग 3 पृष्ठ 244-245 فی ھجرۃ رسول اللہ ﷺ... दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 1993)

लिखा है कि एक तरफ़ नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के जांनिसार सफ़र के साथी हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ख़ुदाई ताईद-ओ-नुसरत के साथ मानो मुहाफ़िज़ फ़रिश्तों के गिरोह में सफ़र पर थे और दूसरी तरफ़ अहल मक्का ने मानो अभी तक हार नहीं मानी थी।

वह भी मुसलसल आपके पीछा करने में थे। इसलिए क़ुरैश की तरफ़ से पीछा करने वाली एक पार्टी आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को तलाश करते करते उम्मे माबद के ख़ेमे तक भी आ पहुंची और ये लोग अपनी सवारियों से उतरते ही रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बारे में पूछने लगे। उम्मे माबद जो थीं वह कुछ भाँप गईं और कहने लगीं कि तुम ऐसी बात पूछ रहे हो कि मैं ने तो कभी नहीं सुनी और न ही मुझे समझ आ रही है कि तुम लोग क्या चाहते हो और जब उन लोगों ने अपने प्रश्न में कुछ सख़्ती करना चाही तो इस बहादुर महिला ने कहा देखो! अगर तुम अभी मुझ से दूर न हुए तो मैं अपने क़बीले वालों को आवाज़ देकर बुला लूँगी। वह इस महिला के स्थान और मर्तबा को जानते थे। इस लिए आफ़ियत इसी में जानी कि वापस लौट जाएं।

(محمد رسول اللہ والذین معہ...لعبد الحمید جودۃ السحار, भाग 3 पृष्ठ 67 अल् हिजरत, प्रकाशन मिस्र)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अभी रास्ते में थे कि उन्हें हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु मिले जो मुस्लमानों के एक क़ाफ़िले के साथ शाम से व्यापार करके वापस आ रहे थे। हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु को सफ़ैद कपड़े पहनाए।

(सही अल् बुख़ारी किताब अल् मनाकिब, باب ھجرۃ النبی ﷺ و اصحابہ الی المدینۃ ,हदीस 3906)

इस मुलाक़ात का वर्णन करते हुए हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस प्रकार लिखा है कि "रास्ते में ज़ुबैर बिन अल् अवाम रज़ियल्लाहु अन्हु से मुलाक़ात हो गई जो शाम से व्यापार करके मुस्लमानों के एक छोटे से क़ाफ़िले के साथ मक्का को वापस जा रहे थे। ज़ुबैर ने एक जोड़ा सफ़ैद कपड़ों का आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को और एक हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की नज़र किया और कहा मैं भी मक्का से हो कर बहुत जल्द आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से मदीना में आ मिलूँगा।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम,पृष्ठ 242)

फिर बुख़ारी की एक रिवायत है। कभी ऐसा भी होता कि राह गुज़रते हुए कई दूसरे क़ाफ़िले वाले जो कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को उनके अक्सर व्यापारिक यात्राओं की वजह से उन्ही जगहों पर देख चुके थे पूछते कि आप रज़ियल्लाहु अन्हो के साथ यह कौन है? तो आप रज़ियल्लाहु अन्हो कह देते कि यह मुझे रास्ता दिखाने वाले हैं। هٰذَا الرَّجُلُ يَهْدِيْنِي السَّبِيْلَ यह व्यक्ति मुझे रास्ते की तरफ़ हिदायत देने वाला है। लोग समझते यह गाईड हैं और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु की मुराद हिदायत के मार्ग से होती।

(सही बुख़ारी, किताब मनाक़िब अल् अंसार,باب ھجرۃ النبی ﷺ و اصحابہ الی المدینۃ, हदीस नंबर 3911)

इस बारे में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस तरह लिखा है कि "चूँकि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो व्यापारी होने के कारण से इस रास्ता से बार बार आते-जाते रहते थे इस लिए अक्सर लोग उनको पहचानते थे परन्तु आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को नहीं पहचानते थे। इस लिए वे अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो से पूछते थे कि यह तुम्हारे आगे आगे कौन है। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते। هٰذَا الرَّجُلُ يَهْدِيْنِي السَّبِيْلَ। यह मेरा हादी है। वे समझते थे कि शायद यह कोई दलील अर्थात गाईड है जो रास्ता दिखाने के लिए हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने साथ ले लिया है। परन्तु हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो का अर्थ कुछ और था।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, पृष्ठ 242)

मंज़िल-ए-मक़सूद तक पहुंचने के बारे में लिखा है कि आठ दिन सफ़र करते हुए ख़ुदाई नुसरतों के साथ अंतत सोमवार के दिन आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मदीना के रास्ते क़ुबा पहुंच गए। हदीस में है कि सोमवार के दिन आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का जन्म हुआ। सोमवार के दिन मक्का से निकले और सोमवार के दिन मदीना पहुंचे और सोमवार के दिन आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वफ़ात हुई। (सब्लुल हुदा वर्रिशाद, भाग 3 पृष्ठ 253 جماع ابواب الھجرۃ الی المدینۃ... दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 1993 ई.) (उद्धरित सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, पृष्ठ 243)

क़ुबा एक कुँवें का नाम था जिसकी निसबत से बस्ती का नाम भी क़ुबा मशहूर हो गया जहां अंसार के क़बीला बनू अम्र बिन औफ़ के लोग आबाद थे। ये बस्ती मदीना से दो मील की दूरी पर थी।(معجم البلدان لشھاب الدین یاقوت الحموی भाग 4 पृष्ठ

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

377 शब्द क़ुबा के अंतर्गत मुद्रित अल् अस्रिया बेरूत 2014 ई.)
कुछ के नज़दीक क़ुबा का फ़ासिला मदीना से तीन मील था। इस को आलीया भी कहते हैं। (फ़र्हंग सीरत, पृष्ठ 230)

मदीना में मुस्लमानों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मक्का से रवानगी का सुन लिया था। वे हर सुबह हर्रा तक जाया करते थे और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का इंतिज़ार करते। मदीना दो हर्रों के मध्य है। हर्रा काली पथरीली ज़मीन को कहते हैं। मदीना की पूर्व की जानिब हर्रा वाकिम है जिसको हर्रा बनू क़ुरेज़ा भी कहते हैं और दूसरा हर्रतुल वबूरा है जो मदीना के पश्चिम में तीन मील की दूरी पर स्थित है। यहां तक कि दोपहर की गर्मी उन्हें लौटा देती। सुबह जाते, इंतिज़ार करते और दोपहर को वापस आ जाते। एक दिन मदीना वाले वे लोग काफ़ी देर इंतिज़ार के बाद लौटे। फिर जब वे अपने घरों में पहुंचे तो एक यहूदी व्यक्ति अपने क़िलों में से एक क़िला पर किसी काम के लिए चढ़ाता कि वह उस को देखे तो उसने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथियों को देख लिया जो सफ़ेद कपड़े पहने हुए थे। मृगतृष्णा उनसे हट रहा था। यहूदी अपने आप पर क़ाबू नहीं रख सका और उसने अपनी बुलंद आवाज़ से कहा। हे अरब के लोगो! यह तुम्हारे वह सरदार हैं जिनका तुम इंतिज़ार कर रहे हो तो मुस्लमान हथियारों की तरफ़ लपके और हर्रा के मैदान में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से जा मिले। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उन समेत दाहिनी तरफ़ मुड़े यहां तक कि आप बनू अम्र बिन औफ़ के मुहल्ले में उनके साथ उतरे और यह सोमवार का दिन था और रबी उल अव्वल का महीना। हज़रत अबू बकर लोगों के लिए खड़े हुए और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ामोश तशरीफ़ फ़र्मा थे और अंसार में से वे लोग जिन्हों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को नहीं देखा था, आए और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को सलाम करने लगे। यहां तक कि धूप रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर पड़ने लगी। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो आगे बढ़े और उन्होंने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर अपनी चादर से साया किया। उस वक़्त लोगों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को पहचान लिया और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बनू अम्र बिन औफ़ के मुहल्ले में दस से अधिक रातें या बुख़ारी की एक रिवायत के अनुसार चौदह रातें ठहरे और उस मस्जिद की बुनियाद रखी जिसकी बुनियाद तक़्वा पर रखी गई और इस में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने नमाज़ पढ़ी। (सही बुख़ारी, किताब मनाक़िब अल् अंसार, باب هجرة النبیﷺ و اصحابه الی المدینة, हदीस नंबर 3906)(सही बुख़ारी, किताब अस्सलात, हदीस नंबर 428) (फ़र्हंग सीरत, पृष्ठ 101-102)

बुख़ारी की इस रिवायत के अनुसार रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दस से ज़ायद रातें क़ुबा में क़ियाम फ़रमाया।

एक रिवायत के अनुसार रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बनू अम्र बिन औफ़ अर्थात क़ुबा में सोमवार, मंगल, बुध और जुमेरात, चार दिन क़ियाम फ़रमाया और जुमा को मदीना की तरफ़ निकले। एक और रिवायत में वर्णन है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने बाईस रातें क़ियाम फ़रमाया।
(सीरतुल अल् हल्बिया, भाग 2 पृष्ठ 75 बाब عرض رسول اللهﷺ نفسه...दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 2002 ई.)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की क़ुबा में आमद का वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं कि "सुराक़ा को रुख़्सत करने के बाद चंद मंज़िलें तै करके रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मदीना पहुंच गए। मदीना के लोग बेसबरी से आपका इंतिज़ार कर रहे थे और इस से ज़्यादा उनकी ख़ुशक़िस्मती और क्या हो सकती थी कि वह सूरज जो मक्का के लिए निकला था मदीना के लोगों पर जा तलूअ हुआ। जब उन्हें यह ख़बर पहुंची कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मक्का से ग़ायब हैं।" अर्थात मदीना वालों को "तो वे उसी दिन से आपका इंतिज़ार कर रहे थे। उनके वफ़्द रोज़ाना मदीना से बाहर कई मील तक आपकी तलाश के लिए निकलते थे और शाम को मायूस हो कर वापस आ जाते थे। जब आप मदीना के पास पहुंचे तो आपने फ़ैसला किया कि पहले आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम क़ुबा में जो मदीना के पास एक गांव था ठहरें। एक यहूदी ने आपकी ऊंटनियों को आते देखा तो समझ गया कि यह क़ाफ़िला मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का है। वह एक टीले पर चढ़ गया और उसने आवाज़ दी। हे केला की औलाद (केला मदीना वालों की एक दादी थी)" अतः केला की औलाद के नाम से भी वहां के लोगों को पुकारा जाता था।'' तुम जिसके इंतिज़ार में थे आ गया है। इस आवाज़ के पहुंचते ही मदीना का हर व्यक्ति क़ुबा की तरफ़ दौड़ पड़ा। क़ुबा के बाशिंदे इस ख़्याल से कि ख़ुदा का नबी उनमें ठहरने के लिए आया है ख़ुशी से फूले नहीं समाते थे। इस अवसर पर एक ऐसी बात हुई जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सादगी के कमाल पर दलालत करती थी। मदीना के अक्सर लोग आपकी शक्ल से वाक़िफ़ नहीं थे। जब क़ुबा से बाहर आप एक दरख़्त के नीचे बैठे हुए थे और लोग भागते हुए मदीना से आपकी तरफ़ आ रहे थे तो चूँकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बहुत ज़्यादा सादगी से बैठे हुए थे उनमें से नावाक़िफ़ लोग हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को देखकर जो उमर में जबकि छोटे थे परन्तु उनकी दाढ़ी में कुछ सफ़ेद बाल आए हुए थे और इसी तरह उनका लिबास रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से कुछ बेहतर था, यही समझते थे कि अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हैं और बड़े अदब से आपकी तरफ़ मुँह करके बैठ जाते थे। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने जब यह बात देखी तो समझ लिया कि लोगों को ग़लती लग रही है। वह झट चादर फैला कर सूरज के सामने खड़े हो गए और कहा हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! आप पर धूप पड़ रही है मैं आप पर साया करता हूँ और इस लतीफ़ तरीक़ से उन्होंने लोगों पर उनकी ग़लती को ज़ाहिर कर दी।" (दीबाचा तफ़सीरुल क़ुरआन, अनवारुल उलूम, भाग 20 पृष्ठ 226-227)

इस वाक़िया की तफ़सील वर्णन करते हुए हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु बुख़ारी का एक हवाला दर्ज फ़रमाते हुए कहते हैं कि "बुख़ारी में बरा बिन आज़िब की रिवायत है कि जो ख़ुशी अंसार को आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मदीना तशरीफ़ लाने के वक़्त पहुंची थी वैसी ख़ुशी की हालत में मैं ने उन्हें कभी किसी और अवसर पर नहीं देखा।

तिरमिज़ी और इब्ने माजा ने अंस बिन मालिक से रिवायत की है कि जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तशरीफ़ लाए तो हमने यूं महसूस किया कि हमारे लिए मदीना रोशन हो गया और जब आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम फ़ौत हुए तो उस दिन से ज़्यादा तारीक हमें मदीना का शहर कभी नज़र नहीं आया।

स्वागत करने वालों की मुलाक़ात के बाद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम किसी ख़्याल के अधीन जिसका वर्णन तारीख़ में नहीं आया सीधे शहर के अंदर दाख़िल नहीं हुए बल्कि दाएं तरफ़ हट कर मदीना की बालाई आबादी में जो असल शहर से दो अढ़ाई मील की दूरी पर थी और जिस का नाम क़ुबा था तशरीफ़ ले गए। उस जगह अंसार के कुछ ख़ानदान आबाद थे जिनमें ज़्यादा मुमताज़ अम्र बिन औफ़ का ख़ानदान था और इस ज़माना में इस ख़ानदान के रईस कुलसूम बिन अलहिद थे। क़ुबा के अंसार ने आपका अत्यधिक गर्मजोशी से स्वागत किया और आप कुलसूम बिन अलहिदम के मकान पर रुक गए। वे मुहाजिरीन जो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से पहले मदीना पहुंच गए हुए थे वे भी उस वक़्त तक ज़्यादा तर क़ुबा में कुलसूम बिन अलहिद और दूसरे सम्मानित अंसार के पास रुके थे और शायद यही वजह थी कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने सबसे पहले क़ुबा में क़ियाम करना पसंद फ़रमाया। एक क्षण में सारे मदीना में आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की आमद की ख़बर फैल गई और समस्त मुस्लमान जोश-ए-मुसर्रत में बेताब हो कर भीड़ की भीड़ आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की रहने के स्थान पर जमा होने शुरू गए।" (सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अज़ हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु एम.ए, पृष्ठ 264-265)

मस्जिद क़ुबा की तामीर के बारे में आता है कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने क़ुबा में क़ियाम के दौरान एक मस्जिद की बुनियाद भी रखी जिसे मस्जिद क़ुबा कहा जाता है। सही बुख़ारी में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बनू अम्र बिन औफ़ के मुहल्ले में दस से ज़ायद रातें ठहरे और इस मस्जिद की

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस
ख़िलाफत का निज़ाम भी अल्लाह तआला और उसके रसूल के आदेशों और निज़ाम का हिस्सा है।
(ख़ुत्बा जुम्अः 24 मई 2019 ई)
तालिबे दुआ
मुहम्मद शुएब सुलेजा पुत्र जनाब मुहम्मद ज़ाहिद सुलेजा मरहूम तथा फैमली, अहमदिया जमाअत कानपुर(उत्तर प्रदेश)

बुनियाद रखी जिसकी बुनियाद तक़्वा पर रखी गई और इस में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने नमाज़ पढ़ी।
(बुख़ारी, किताब मनाक़िब अल् अंसार, هجرة النبی ﷺ و اصحابه الی المدینة हदीस नंबर 3906)
रिवायत में वर्णन है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बनू अम्र बिन औफ़ के लिए मस्जिद की बुनियाद रखी। जब आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस की बुनियाद रखी तो सबसे पहले आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने क़िबले की सिम्त एक पत्थर रखा। फिर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने एक पत्थर ला कर रखा। फिर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो एक पत्थर लेकर आए और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के पत्थर के साथ रख दिया। फिर समस्त लोग तामीर में व्यस्त हो गए। जब मस्जिद क़ुबा की तामीर हो रही थी तो नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक पत्थर लाते जिसे आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपने पेट के साथ लगाया हुआ होता। बड़ा भारी पत्थर होता। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उस पत्थर को रखते। कोई व्यक्ति आता और चाहता कि उस पत्थर को उठाए परन्तु वह उठा नहीं सकता। इस पर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उसे हुक्म देते कि उसे छोड़ दो और कोई और पत्थर ले आओ।
(अल् रोज़ा निस्फ़, भाग2 पृष्ठ 332 तासीस मस्जिद क़ुबा, दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत)
मस्जिद क़ुबा के सम्बन्ध में आता है कि यही वह मस्जिद है जिसकी बुनियाद तक़्वा पर रखी गई थी परन्तु कुछ रिवायात में मस्जिद नब्वी को वह मस्जिद क़रार दिया गया है जिसकी बुनियाद तक़्वा पर रखी गई थी। सीरत हल्बिया में वर्णन है कि इन दोनों अक़्वाल में कोई इख़्तिलाफ़ नहीं क्योंकि इन दोनों मसाजिद में से हर एक की बुनियाद तक़्वा पर ही रखी गई। इस बात की ताईद हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से मनक़ूल है। इस रिवायत के अनुसार उनकी राय थी कि मदीना की समस्त मसाजिद जिसमें क़ुबा की मस्जिद भी शामिल है इस की बुनियाद तक़्वा पर ही रखी गई है लेकिन जिसके सम्बन्ध में आयत नाज़िल हुई थी वह मस्जिद क़ुबा ही है।
(अल् सीरतुल हल्बिया भाग 2 पृष्ठ 75 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2002 ई.)
दस दिन या चौदह दिन क़ियाम के बाद जुमा के दिन नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम क़ुबा से मदीना के लिए रवाना हुए। रास्ते में जब बनू सालिम बिन औफ़ की आबादी में पहुंचे तो जुमा का वक़्त हो गया। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुस्लमानों के हमराह वादिए रानूना की मस्जिद में नमाज़-ए-जुमा अदा की और उनकी संख्या एक सौ थी। वादई रानूना मदीना के दक्षिण में वाक़्य है। जब आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इस मस्जिद में जुमा की नमाज़ अदा की तो उस वक़्त से इस मस्जिद को मस्जिद अल् जुमा कहा जाने लगा। यह पहला जुमा था जो आपने मदीना में पढ़ा था।
(सीरतुल अल् हल्बिया, भाग 2 पृष्ठ 81 बाब अल् हिजरत अल् मदीना, दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2002 ई.)(अल् सीरतुल हल्बिया लेइब्ने हश्शाम, पृष्ठ 349 बाब हिजरत रसूलुल्लाह, दारुल क़ुतुब इल्मिया 2001 ई.)(एटलस सीरत नबविय्या,पृष्ठ 168)
हो सकता है यह मस्जिद बाद में वहां बनाई गई हो। इस जगह जुमा पढ़ने की वजह से उसका नाम रखा गया हो। फिर वर्णन आता है कि नमाज़-ए-जुमा की अदायगी के बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपनी ऊंटनी पर सवार हो कर मदीना की तरफ़ रवाना हुए। उस वक़्त आपने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को पीछे बिठाया हुआ था। (شرح الزرقانی علی المواھب اللدنی, भाग 2 पृष्ठ 157 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 1996 ई.)
इनाम के लालच में बहुत से लोगों ने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का पीछा करने की कोशिश की।
एक वाक़िया तारीख़ की कुतुब में इस प्रकार वर्णन हुआ है। बुरेदा बिन हुसेब वर्णन करते हैं कि जब क़ुरैश ने उसके लिए सौ ऊंटों का इनाम निर्धारित किया जो नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरादा करे अर्थात आपको ज़िंदा या मुर्दा पकड़ के लाए तो मुझे भी लालच ने तैयार किया तो मैं बनू सहम के सत्तर लोगों के साथ सवार हो कर निकला और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को मिला। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने पूछा कि तुम कौन हो? मैं ने कहा कि बुरेयदा। इस पर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की तरफ़ मुतवज्जा हुए और फ़रमाया अबू बकर! हमारा मामला ठंडा और दरुस्त हो गया। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने पूछा तुम किस क़बीला से हो? मैं ने कहा क़बीला असलम से। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया सलामती में रहे। फिर पूछा किस की औलाद से? मैं ने कहा बनू सहम की। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया हे अबू बकर तुम्हारा सहम अर्थात तुम्हारा नसीबा निकल आया। फिर बुरेयदा ने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से पूछा कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम कोन हैं? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाया: मैं मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह, अल्लाह का रसूल हूँ। इस पर बुरेयदा ने कहा कि मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उसके बंदे और रसूल हैं। फिर बुरेयदा ने इस्लाम क़बूल कर लिया और सब लोगों ने भी जो उस के साथ थे। बुरेयदा ने कहा समस्त प्रशंसा अल्लाह तआला के लिए हैं। बनू सहम ने दिल्ली ख़ुशी से बग़ैर किसी जबर के इस्लाम क़बूल किया। जब सुबह हुई तो बुरेयदा ने कहा हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मदीना में आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का दाख़िला एक झंडे के साथ होना चाहिए। फिर उसने अपना इमामा सिर से उतारा और उसे अपने नेज़े पर बांध दिया और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के आगे आगे चलने लगा यहां तक कि मुस्लमान मदीना में दाख़िल हो गए। (شرح الزرقانی علی المواھب اللدنی, भाग 2 पृष्ठ 148 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 1996 ई.) (सीरतुल अल् हल्बिया, भाग 2, पृष्ठ 71 बाब अल् हिजरत अलल मदीना दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत)
सही बुख़ारी में रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मदीना आमद के सम्बन्ध में हज़रत अंस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत इस तरह है कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मदीना आए और मदीना के ऊपर के हिस्सा में एक क़बीला में जिन्हें बनू अम्र बिन औफ़ कहा जाता था उतरे। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उनमें चौदह रातें ठहरे। फिर बनू नज्जार को बुला भेजा। वे तलवारें पहने हुए आए और यह वाक़िया मुझे ऐसा याद है मानो कि मैं नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अब भी अपनी सवारी पर सवार देख रहा हूँ और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पीछे सवार थे और बनू नज्जार का जत्था आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के इर्द-गिर्द था।आख़िर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत अबू अय्यूब रज़ियल्लाहु अन्हु के सेहन में डेरा डाला।
(सही बुख़ारी, किताब अस्सलात, बाब هل تنبش قبور مشرکی الجاھلیة... हदीस 428)
इस का अहवाल वर्णन करते हुए हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु लखते हैं कि "क़ुबा में अधिक अधिक दस दिन क़ियाम के बाद जुमा के रोज़ आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मदीना के अंदरूनी हिस्सा की तरफ़ रवाना हुए। अंसार-ओ-मुहाजिरीन की एक बड़ी जमाअत आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ थी। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम एक ऊंटनी पर सवार थे और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पीछे थे। यह क़ाफ़िला आहिस्ता-आहिस्ता शहर की तरफ़ बढ़ना शुरू हुआ। रास्ता में ही नमाज़-ए-जुमा का वक़्त आ गया और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बनू सालिम बिन औफ़ के मुहल्ला में ठहर कर सहाबा के सामने ख़ुतबा दिया और जुमा की नमाज़ अदा की। इतिहासकारलिखते हैं कि जबकि इस से पहले जुमा का आरंभ हो चुका था परन्तु यह पहला जुमा था जो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने ख़ुद अदा किया। और इसके बाद से जुमा की नमाज़ का तरीक़ बाक़ायदा जारी हो

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

गया।” (तो यहां से भी यही ज़ाहिर होता है कि वो मस्जिद जो थी वह बाद में बनाई गई)

“जुमा से फ़ारिग़ हो कर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का क़ाफ़ला फिर आहिस्ता-आहिस्ता आगे रवाना हुआ। रास्ता में आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मसलमानों के घरों के पास से गुज़रते थे तो वह जोश-ए-मोहब्बत में बढ़ बढ़कर अर्ज़ करते थे हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! यह हमारा घर, यह हमारा माल और जान हाज़िर है और हमारे पास हिफ़ाज़त का सामान भी है। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हमारे पास तशरीफ़ फ़र्मा हूँ। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम इन के लिए दुआ-ए-ख़ैर फ़रमाते और आहिस्ता आहिस्ता शहर की तरफ़ बढ़ते जाते थे। मुस्लमान औरतों और लड़कियों ने ख़ुशी के जोश में अपने घरों की छतों पर चढ़ चढ़ कर गाना शुरू किया।

طَلَعَ الْبَدْرُ عَلَيْنَا مِنْ ثَنِيَّاتِ الْوَدَاعِ
وَجَبَ الشُّكْرُ عَلَيْنَا مَا دَعَىٰ لِلّٰهِ دَاعِ

अर्थात आज हम पर कौहे वदा की घाटियों से चौधवीं के चांद ने तलूअ किया है। इसलिए अब हम पर हमेशा के लिए ख़ुदा का शुक्र वाजिब हो गया है। मुस्लमानों के बच्चे मदीना की गली कूचों में गाते फिरते थे कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम आ गए। ख़ुदा के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम आ गए। और मदीना के हब्शी गुलाम आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की तशरीफ़ आवरी की ख़ुशी में तलवार के करतब दिखाते फिरते थे। जब आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम शहर के अंदर दाख़िल हुए तो हर व्यक्ति की यह ख़ाहिश थी कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम आस के पास क़ियाम फ़रमाएं और हर व्यक्ति बढ़ बढ़ कर अपनी ख़िदमत पेश करता था। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम सब के साथ मुहब्बत का कलाम फ़रमाते और आगे बढ़ते जाते थे सावधानी कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ऊँटनी बनू नज्जार के मुहल्ला में पहुंची। इस जगह बनू नज्जार के लोग हथियारों से सजे हुए सफ़ बंद हो कर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के इस्तिक़बाल के लिए खड़े थे और क़बीला की लड़कियां दफ़्रें बजा बजा कर ये शेअर गा रही थीं।

نَحْنُ جَوَارٍ مِنْ بَنِي نَجَّارِ يَا حَبَّذَا مُحَمَّدًا مِنْ جَارِ

अर्थात हम क़बीला बनू नज्जार की लड़कियां हैं और हम क्या ही ख़ुश-क़िस्मत हैं कि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हमारे मुहल्ला में ठहरने के लिए तशरीफ़ हैं।” (सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अज़ हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब, पृष्ठ 266- 267)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अपने और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के घरवालों को मदीना बुलाने के वाक़िया का वर्णन करते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि “कुछ अरसा के बाद आपने अपने आज़ाद गुलाम” अर्थात मदीना आने के कुछ अरसा बाद “ज़ेद रज़ियल्लाहु अन्हो को मक्का में भिजवाया कि वह आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के घरवालों को ले आए। चूँकि मक्का वाले इस अचानक हिज्रत की वजह से कुछ घबरा गए थे इस लिए कुछ अरसा तक मज़ालिम का सिलसिला बंद रहा और इसी घबराहट की वजह से वे रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के ख़ानदान के मक्का छोड़ने में प्रतिरोधी नहीं हुए और ये लोग ख़ैरीयत से मदीना पहुंच गए। इस अरसा में जो ज़मीन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ख़रीदी थी सबसे पहले वहां आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मस्जिद की बुनियाद रखी और इस के बाद अपने लिए और अपने साथियों के लिए बनवाए।”

(दीबाचा तफ़सीरुल क़ुरआन, अनवारुल उलूम, भाग 20 पृष्ठ 230)

मदीना हिज्रत के बाद हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ सुख में हज़रत ख़ुबेब बिन इसाफ़ के पास ठहरे।

सुख मदीना के मुज़ाफ़ात में एक जगह है जो मस्जिद नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से तक़रीबन दो मील की दूरी पर थी। हज़रत ख़ुबेब रज़ियल्लाहु अन्हो का ताल्लुक़ बनू हअरिस बिन ख़ज़रज से था। एक कथन के अनुसार हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की रिहायश हज़रत खारिजा बिन ज़ैद के पास थी।

(अल् सीरतुल नब्विय्या ले इब्ने हश्शाम, पृष्ठ 348 बाब هجرة الرسول ﷺ दारुल कुतुब इल्मिया 2001ई.)

कुछ रिवायात के अनुसार हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने सुख में ही अपना मकान और कपड़ा बनाने का कारख़ाना बना लिया था। (मक़ालात सीरत, भाग3 पृष्ठ 131 प्रकाशन इस्लामिया लाहौर 2016 ई.) इस से कारोबार किया। इं शा अल्लाह यह वर्णन आगे भी होगा ।

इस वक़्त में कुछ मरहूमीन का वर्णन करना चाहता हूँ जिनमें से पहला वर्णन है चौधरी असग़र अली कलार साहिब मरहूम जो अल्लाह की खातिर केद हुए थे। यह मुहम्मद शरीफ़ साहिब कलार, बहावलपुर के बेटे थे। 10 जनवरी को हालत-ए-असीरी मैं बीमार हुए और वहीं हस्पताल में उनकी वफ़ात हो गई। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। इस लिहाज़ से यह शहीदों में ही शुमार होंगे।

तफ़सीलात के अनुसार मरहूम के ख़िलाफ़ 24 सितंबर 2021 ई. को पुलिस स्टेशन बग़दाद अल-जदीद बहावलपुर में दफ़ा 295-c तौहीन-ए-रिसालत (नऊज़ूबिल्लाह (हम इससे ख़ुदा की शरण चाहते हैं), तौहीन रिसालत का इल्ज़ाम तो फ़ौरन अहमदियों पर लगा देते हैं, इसके तहत मुक़द्दमा दर्ज हुआ और 26 सितंबर को गिरफ़्तारी अमल में आई। गिरफ़्तारी के बाद मरहूम बहावलपुर जेल में थे। जेल में ख़ून की उल्टियां आने पर और तबीयत ख़राब होने पर मरहूम को 4 जनवरी 2022 ई. को बहावलपुर के हस्पताल में मुंतक़िल किया गया जहां ईलाज जारी था कि 10 जनवरी को सुबह फ़ज्र से पूर्व उनकी वहां असीरी की हालत में ही वफ़ात हो गई। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। वफ़ात के वक़्त मरहूम की उमर 70 साल थी।

मरहूम की दरख़्वास्त-ए-ज़मानत अदालत में सुनवाई में थी और 8 जनवरी को ज़मानत की तारीख़ थी परन्तु पुलिस रिकार्ड लेकर नहीं आई जिस पर जज ने 11 जनवरी की तारीख़ दे दी लेकिन फ़ैसला से पूर्व ही मरहूम मालिक-ए-हक़ीक़ी के हुज़ूर हाज़िर हो गए। मरहूम तीन माह पंद्रह दिन केद रहे।

मरहूम ने 1971 ई. में आयु के आरंभ में मैट्रिक के बाद ख़ुद ही बैअत करके अहमदियत में शमूलीयत इख़तियार की थी। अपने ख़ानदान में अकेले अहमदी थे। अहमदियत में शमूलीयत के बाद मुख़ालिफ़ाना हालात का सामना रहा इसके बावजूद साबित-क़दम रहे। एफ़ सी कॉलेज से उन्होंने m.sc maths की डिग्री हासिल की। दौरान-ए-तालीम क़बूल अहमदियत के बिना पर माता पिता ने उनकी माली सहायता बंद कर दी और शर्त रखी कि अहमदियत छोड़ने की सूरत में ही आइन्दा तालीमी अख़राजात अदा किए जाएंगे। इसके बावजूद मरहूम साबित-क़दम रहे और बच्चों को टीयूशन पढ़ा कर अपने तालीमी अख़राजात पूरे करते रहे। जबकि मरहूम के पिता साहिब ने मरहूम की साबित क़दमी और तक़्वा से मुतास्सिर हो कर बाद में मुख़ालिफ़त तर्क कर दी और इसी संदेह के अंतर्गत कि कहीं अहमदी बेटा ग़ैर अहमदी पिता की जायदाद से महरूम न कर दिया जाए अपनी ज़िंदगी में ही उनके नाम का हिस्सा मुंतक़िल कर दिया था। उनके पिता ने उनके साथ यह नेकी की। मरहूम अल्लाह तआला के फ़ज़ल से 1/8 हिस्सा के मूसी थे। माली तहरीकात में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेने वाले थे। नए साल के ऐलान के साथ ही सौ फ़ीसद अदायगी कर दिया करते थे। ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया से अत्यधिक प्रेम था। वाक़्फ़ीन-ए-ज़िंदगी और मर्कज़ी मेहमानान की इज़्ज़त और मेहमान-नवाज़ी का वस्फ़ नुमायां था। जमाअती दौराजात में अपनी गाड़ी हमेशा पेश करते थे। दावत इलाल्लाह का बहुत शौक़ था। बहादुर, निडर दाई इलाल्लाह थे। अल्लाह तआला ने कई सईद रूहों को मरहूम के हाथों से बैअत करके अहमदियत में शमूलियत की तौफ़ीक़ बख़शी। नामाज़ क़ुरआन के अतिरिक्त नमाज़ तहज्जुद के पाबंद थे। ग़रीब परवरी और ख़िदमत-ए-ख़लक़ करने वाले लोगों के लिए लाभदायक वजूद थे। ख़ानदान के हर फ़र्द की बावजूद मुख़ालिफ़त के माली और अख़लाक़ी ख़िदमत की तौफ़ीक़ पाई। मरहूम को शहादत की बड़ी ख़ाहिश थी जो इस तरह अल्लाह तआला ने पूरी कर दी।

मरहूम की पत्नी श्रीमती ने वर्णन किया कि जेल में मुलाक़ात के दौरान मरहूम ने वर्णन किया कि अल्लाह तआला की तरफ़ से उन्हें तीन मर्तबा सलाम का पैग़ाम मिला है और दूसरी ख़ाब में यह वर्णन किया कि मैं ने जेल से अपनी मय्यत निकलते देखी है। मरहूम को बहैसीयत नाज़िम अंसारुल्लाह, ज़ईम आला बहावलपुर शहर, सैक्रेटरी दावत इलाल्लाह, सैक्रेटरी वक़्फ़-ए-जदीद, सैक्रेटरी इस्लाह-व्-इरशाद ज़िला ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली। वफ़ात के वक़्त ज़िलई क़ाज़ी भी थे। मरहूम ने अपने पीछे रहने वालों में अपनी पत्नी के अतिरिक्त दो बेटे और एक बेटी छोड़े हैं। उनके एक बेटे मुल्क से बाहर ही हैं और बेटी भी कैनेडा में हैं। अल्लाह तआला असग़र अली कलार साहिब से मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए। दर्जात बुलंद

फ़रमाए। उनके पीछे रहने वालों को सब्र-ए-जमील अता फ़रमाए और उनके नक़्श-ए-क़दम पर चलने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

बाक़ी कैदियों के बारे में भी दुआ करें। अल्लाह तआला उनकी रिहाई के सामान पैदा फ़रमाए।

दूसरा वर्णन है मिर्ज़ा मुमताज़ अहमद साहिब का जो वकालते उल्या रब्वाह के कारकुन थे। पचासी (85) साल की आयु में उनकी वफ़ात हुई है। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। अल्लाह के फ़ज़ल से मूसी थे। उनके ख़ानदान में अहमदियत का आरम्भ उनके पिता कैप्टन डाक्टर शेर मुहम्मद अली साहिब के माध्यम से हुआ जिन्हों ने 1923 ई. में बैअत की थी। मिर्ज़ा मुमताज़ साहिब ने अप्रैल 1964 ई. में दफ़्तर अमानत तहरीक जदीद में बतौर मुहर्रिर ख़िदमत शुरू की और ता दम-ए-आख़िर अट्ठावन वर्ष तक ख़िदमत की तौफ़ीक़ पाई। उनकी शादी श्रीमान चौधरी मुज़फ़्फ़रुद्दीन बंगाली साहिब की बेटी माजिदा बेगम से हुई। उनसे अल्लाह तआला ने आपको दो बेटों और एक बेटी से नवाज़ा।

उनके नवासे ख़ालिद मंसूर लिखते हैं कि नाना हमें हमेशा जमाअत की ख़िदमत में वाबस्ता रहने की तलक़ीन करते थे। हमेशा नमाज़ बाजमाअत की एहमियत बताते और तलक़ीन करते। कहते हैं मेरे पिता साहिब की वफ़ात के बाद नाना ने मुझे उनकी कमी महसूस नहीं होने दी। हमेशा उनको अपना दोस्त पाया। हमेशा जमाअत के कामों में व्यस्त देखा। एक मिसाली दोस्त, बाप और जमाअत के एक मिसाली कारकुन थे। हर एक से मुहब्बत, प्यार और शफ़क़त का सुलूक करते थे। वक़्त की पाबंदी बहुत करते थे और इसकी एहमीयत बताते थे।

उनके साथ काम करने वाले एक कारकुन सईद नासिर साहिब हैं। वह कहते हैं कि बड़ा लंबा अरसा मुझे उनके साथ काम करने का अवसर मिला। बड़ी सफ़ाई से काम किया करते थे और अपना काम मुकम्मल करने के बाद अपने साथियों के काम में भी उनकी मदद किया करते थे।

फिर एक मुरब्बी लुक़्मान साक़िब साहिब हैं वह कहते हैं मैं ने देखा कि तबीयत की कमज़ोरी के बावजूद अपने मुफ़व्विज़ा उमूर मुस्तइद्दी से बख़ूबी सरअंजाम देते थे। आख़िरी वक़्त तक हाफ़िज़ा कमाल का था। सालों पहले के किसी मामले के बारे में फ़ौरन बता देते कि यह मामला अमुक फाईल में अमुक जगह पड़ा हुआ है। हलके मज़ाक़ को पसंद करते और लुतफ़ अंदोज़ भी होते थे लेकिन बिला-वजह फ़ुज़ूल बातें करने, गप्पें मारने वाली उनकी तबीयत नहीं थी। जो कुछ वक़्त अपना काम मुकम्मल करने पर बचता तो दफ़्तर में ही कुर्सी पर बैठ कर कोई पुरानी फाईल लेकर उसको पढ़ना शुरू कर देते।

डाक्टर सुलतान मुबश्शिर ने भी उनके बारे में लिखा है कि बड़ी आजिज़ी थी। एक सीनीयर कारकुन होने के बावजूद हस्पताल जब आते थे तो अपनी बारी का इंतिज़ार करते और कभी जल्द-बाज़ी का प्रदर्शन नहीं करते। उनमें शुक्रगुज़ारी और एहसानमंदी का बड़ा वस्फ़ था। सब्र का माद्दा भी उनमें बहुत ज़्यादा था। बड़ी लंबी बीमारी में तकलीफ़ की ज़्यादती के बावजूद भी उन्होंने बेसबरी का प्रदर्शन नहीं किया और सिवाए चंद एक दफ़्तर के दोस्तों के ज़्यादा हलक़ा अहबाब भी नहीं था।

हमेशा मैं ने भी उनको बड़ा ख़ामोश स्वभाव वाला देखा है और अपने चंद दोस्तों के साथ ही और दफ़्तर से घर और घर से दफ़्तर यही मामूल होता था लेकिन बड़ी मेहनत से काम करने वाले। बड़े इख़्लास और वफ़ा के साथ उन्होंने उमर गुज़ारी है।

अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए। उनकी औलाद को भी उनकी नेकियां जारी रखने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

अगला वर्णन है कर्नल रिटायर्ड डाक्टर अब्दुल ख़ालिक़ साहिब जो फ़ज़ल उमर हस्पताल के साबिक़ ऐडमिनिस्ट्रेटर थे। सतानवे वर्ष की उमर में पिछले दिनों उनकी वफ़ात हुई है। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन।अल्लाह तआला के फ़ज़ल से मूसी थे। उनके ख़ानदान में अहमदियत उनके पिता मियां मुहम्मद आलम साहिब के द्वारा आई जिन्हों ने 1919 ई. में बैअत की थी। जबकि डाक्टर अब्दुल ख़ालिक़ ने 1938 ई. में बैअत की थी। अपनी बैअत की तफ़सील बताते हुए कहते हैं कि हमारे अब्बा जान अलफ़ज़ल मंगवाते थे। इसके अध्यन से अहमदियत की तरफ़ तवज्जा हुई और 1938 ई. में हम तीन बहन भाईयों ने बैत कर ली। हज़रत माता नामाज़ क़ुरआन की पाबंद थीं। हमारी बैअत कर लेने के कुछ अरसा बाद उन्होंने भी बैअत कर ली। कहते हैं 1939 ई. के जलसा में जो जुबली का जलसा था में पहली बार क़ादियान गया और बाद में फिर अक्सर जलसा पर जाने का अवसर मिलता रहा।

उनकी पत्नी की 1987 ई. में वफ़ात हो गई थी। उनके दो बेटे और दो बेटियां हैं। उनके एक बेटे डाक्टर अब्दुल्लाह बारी अमीर जमाअत अहमदिया इस्लामाबाद हैं। 1974 ई. में जब भुट्टो हुकूमत ने अहमदियों को ग़ैर मुस्लिम क़रार देने का ज़ालिमाना क़ानून मंज़ूर किया तो डाक्टर साहिब ने सरकारी मुलाज़मत से अस्तीफ़ा दे दिया और नुसरत जहां स्कीम के तहत अपनी ख़िदमात पेश कीं। मर्कज़ की तरफ़ से आपको 1977 ई. में सीरालियून भिजवाया गया जहां आपको तीन साल इन्सानियत की ख़िदमत करने की तौफ़ीक़ मिली। फिर 1992 ई. में पी आई ए ने ताशकंद के लिए परवाज़ें शुरू कीं तो डाक्टर साहिब ने इस अवसर को मुनासिब समझते हुए ताशकंद और उज़बेकिस्तान में वक़्फ़-ए-आरिज़ी गुज़ारने की दरख़ास्त दी। मर्कज़ ने ईः निवेदन स्वीकार कर लिया तो उन्होंने अपनी छोटी बहन के साथ समरक़ंद और बुख़ारा में वक़्फ़ आरिज़ी के दिनों में गुज़ारे और इस दौरान में इन्सानियत की बेलौस ख़िदमत भी की। अहमदियत का पैग़ाम पहुंचाने की भी उनको सआदत मिली 1994 ई. में हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल् राबे ने उनको फ़ज़ले उमर हस्पताल रब्वाह का ऐडमिनिस्ट्रेटर निर्धारित किया जहां आपने जून 2005 ई. तक तक़रीबन दस साल से ज़ायद ख़िदमत की तौफ़ीक़ पाई। आप के दौर में फ़ज़ल उमर हस्पताल में तामीर और तौसीअ के कई मंसूबे मुकम्मल हुए। फिर उनके बारे में किसी बच्चे ने शायद वर्णन किया है कि इसी, इकासी साल की उमर को पहुंचने के बावजूद आपका ख़िदमत का जज़बा तो जवान था लेकिन उन्हें एहसास हो रहा था कि मुझे बुढ़ापा आ रहा है। इसलिए उन्होंने 2005 ई. में दरख़ास्त की और उन्होंने मुझे कहा तो फिर उनकी रिटायरमैंट हो गई। वहां से फ़राग़त हो गई तो फिर उन्होंने इस्लामाबाद में मुस्तक़िल रिहायश इख़तियार कर ली। वहां इस्लामाबाद में भी स्थानिय क़ाज़ी की हैसियत से ख़िदमात सरअंजाम देते रहे।

उनके बड़े बेटे डाक्टर अब्दुल्लाह बारी कहते हैं कि औलाद की दीनी और अख़लाक़ी तर्बीयत का आपको हरवक़्त फ़िक्र रहता था। क़ुरआन-ए-करीम की सुबह शाम और हर वक़्त तिलावत में आप व्यस्त रहते थे। बहुत प्रिय कार्य था। अहम मुआमलात में समस्त फ़ैसलाजात आप क़ुरआन-ए-करीम की रोशनी में करते थे।

उनके दामाद डाक्टर मुज़फ़्फ़र अली नासिर, यह भी ज़िला वाह कैन्ट के नायब अमीर हैं, यह कहते हैं कि आज तक दिन-भर किसी को इस क़दर तिलावत क़ुरआन-ए-करीम करते नहीं देखा। उनको क़ुरआन से इशक़ था। एक मर्तबा हस्पताल से डिस्चार्ज हुए तो स्टाफ़ उदास हो गया कि हमें क़ुरआन कौन सुनाएगा। सर्दी और गर्मी में तहज्जुद में आपकी बाक़ायदगी हमारे लिए एक उदाहरण थी। ख़िलाफ़त और जमाअत के साथ गहिरी मुहब्बत थी। बहुत सादा ज़िंदगी थी और कभी कोई शिकायत नहीं की।

उनके भाई के नवासे अब्दुस समद रिज़्वी लिखते हैं कि आपने अल्लाह तआला की ख़ुशनुदी की ख़ातिर हर तकलीफ़ को बर्दाश्त किया। अपनी ख़ुशियों से दसतबरदारी इख़तियार की। कहते हैं उनके घर रब्वाह में मुझे कई दफ़ा क़ियाम का अवसर मिला। मेरे लिए उनका वजूद ज़िंदा ख़ुदा को पहचानने का माध्यम हुआ। उनकी नमाज़ तहज्जुद बेमिसल हुआ करती थी। ख़िलाफ़त की इज़्ज़त और मुहब्बत आप में रासिख़ थी जो हमारी बेहतरीन तर्बीयत का माध्यम हुई।

फ़ज़ल-ए-उमर हस्पताल के डाक्टर अब्दुल ख़ालिक़ कहते हैं कि डाक्टर साहिब हस्पताल के नौजवान डाक्टरों से मुहब्बत और शफ़क़त का सुलूक करते थे और सीनियर डाक्टरज़ को तवज्जा दिलाते कि जूनियर डाक्टरज़ की ट्रेनिंग पर ख़ुसूसी तवज्जा दिया करें। हस्पताल के अम्वाल की दियानतदारी से निगरानी और हिफ़ाज़त किया करते थे। ग़रीब और मुस्तहिक़ अफ़राद की ज़ाती जेब से मदद किया करते थे। डाक्टर मुहम्मद अहमद अशर्फ़ कहते हैं कि बहुत सादा मिज़ाज थे। नरम दिल, बुर्दबारी बहुत ज़्यादा थी, बहुत शफ़ीक़ वजूद थे और ज़्यादा गुफ़्तगु के आदी नहीं थे लेकिन इंतिज़ामी लिहाज़ से छोटी छोटी बातों पर बहुत गहिरी नज़र रखते थे और उसूलों की पाबंदी करवाया करते थे। फिर वक़्फ़-ए-आरिज़ी के लिए दूसरे डाक्टरों को तहरीक भी किया करते थे कि फ़ज़ल उमर हस्पताल में आएं और अपने दामाद को भी, बेटों को भी कहते थे।

अल्लाह तआला मरहूम से मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए। उनकी नेकियां उनकी औलादों में भी जारी रखे। नमाज़ों के बाद उनकी नमाज़ जनाज़ा अदा करूँगा।

★ ★ ★

पृष्ठ02 का शेष

लेकिन लाईव स्ट्रीमिंग के माध्यम से पूरे मुल्क में जलसा सुना और देखा जाएगा। आपने विभाग M.T.A को तवज्जा दिलाई कि लाईव स्ट्रीमिंग के माध्यम से पूरे मुल्क में जलसा को दिखाना और सुनाना चूँकि एक अहम ज़िम्मेदारी है इस लिए उन्हें विशेषता तवज्जा के साथ काम करना होगा। आपने इस अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त करने की खातिर आयोजित होने वाले जलसे का महत्त्व और बरकात पर रोशनी डाली। जलसा सालाना के काम को अहसन रंग में सरअंजाम देने के लिए उसके जो तीन बुनियादी विभाग हैं, इन तीनों विभागों के तहत डयूटी देने वाले कारकुनान को आपने उनकी ज़िम्मेदारीयों की तरफ़ तवज्जा दिलाई। आपने सभी कारकुनान को पूरी मेहनत और ज़िम्मेदारी से काम करते हुए जलसे की डयूटी देने और डियूटी के स्थान पर हाज़िर रहने की तरफ़ तवज्जा दिलाई और सैक्योरिटी के हवाले से भी कुछ अहम विषयों की तरफ़ मार्गदर्शन फ़रमाया तथा नमाज़ बाजमाअत में किसी किस्म की सुस्ती इख़्तियार न करने और वक़्त पर बाक़ायदगी के साथ नमाज़ की अदायगी की तरफ़ तवज्जा दिलाई। आख़िर पर आपने सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के इर्शादात के हवाला से जलसे में तशरीफ़ लाने वाले हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मेहमानों की मेहमान-नवाज़ी के महत्व पर रोशनी डाली और उनके साथ निहायत इज़्ज़त और एहतिराम के साथ पेश आने की नसीहत फ़रमाई और आख़िर पर समस्त कारकुनान को दुआओं पर-ज़ोर देने की तरफ़ तवज्जा दिलाई कि अल्लाह तआला इस जलसे को हर लिहाज़ से सफ़ल और बाबरकत फ़रमाए। आख़िर पर नुमाइंदा हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने दुआ कराई और इस तरह मुआइना कारकुनान की यह तक़रीब अपने अंत को पहुंची। इसके बाद आपने समस्त क़ियाम गाहों का मुआइना फ़रमाया और ज़रूरी हिदायात से नवाज़ा।

तिथि 24 दिसंबर 2021 जलसे का पहला दिन

उद्घाटनिय इज्लास

जलसा सालाना का इफ़्तिताही उद्घाटन माननीय मौलाना मुहम्मद करीमुद्दीन शाहिद साहिब सदर, सदर अंजुमन अहमदिया क़ादियान की सदारत से आयोजित हुआ। इस से पूर्व आपने ठीक दस बजे अहमदियत का ध्वज लहराया और दुआ कराई। तिलावत माननीय तारिक़ अहमद लोन साहिब आफ़ काठपूरा कश्मीर ने की। आपने सूरत अनफ़ाल की आयात 21 से 26 की तिलावत की। इन आयात का अनुवाद माननीय जमाल शरीयत अहमद साहिब नायब इंचार्ज शोबा नूरुल इस्लाम ने सुनाया। तिलावत के बाद सदर-ए-इज्लास ने इफ़्तिताही ख़िताब फ़रमाया। आपने फ़रमाया कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने वर्ष 1891 मेंअल्लाह तआला के आदेश से इस जलसे की बुनियाद रखी थी और यह जलसा दुनियावी मेलो की तरह कदापि नहीं है बल्कि उसके आयोजित करने का उद्देश्य ईमान और मार्फ़त में तरक़्क़ी करना हैं जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया समस्त नेक और इस जमाअत में शामिल बैअत पर ज़ाहिर हों कि बैअत करने से उद्देश्य यह है कि ता दुनिया की मुहब्बत ठंडी हो और अपने मौलाकरीम और रसूल मक़बूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मुहब्बत दिल पर ग़ालिब आ जाए। तथा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि एक आरिज़ी फ़ायदा इन जलसों का यह भी होगा कि हर-यक नए साल में जिस क़दर नए भाई इस जमाअत में दाख़िल होंगे वह तारीख़ निर्धारित पर हाज़िर हो कर अपने पहले भाईयों के मुँह देख लेंगे। माननीय सदर-ए-इज्लास ने फ़रमाया कि यही वह इस्लामी भाईचारा है जो उम्मत वाहिदा बनाने के लिए निहायत अहम है। हुज़ूर अनवर ने जलसा सालाना यू.के में शमूलीयत इख़्तियार करने वालों के जलसे के बारे में कुछ ईमान अफ़रोज़ तास्सुरात वर्णन फ़रमाए। एक तास्सुर माननीय सदर गिनी कनाकरी के अल्हाज मुहम्मद वकील यतारा साहिब का वर्णन फ़रमाया जो मज़हबी उमूर के इन्सपैक्टर जनरल हैं, वह कहते हैं कि जलसे के इन तीन दिनों में जिस चीज़ ने मुझे बहुत प्रभावित किया वह यह थी कि अहमदी अहबाब की तर्बीयत ख़ालिस इस्लामी तालीमात के अनुसार की गई है और समस्त अहमदी जो इस जगह जमा हुए यूं लगता था कि ये सब इस्लामी भाई चारे की उच्च उदाहरण हैं। एक ही माँ की औलाद और एक ही घर से आ रहे हैं। ग़ैरमामूली नज़्म-ओ-ज़ब्त, रज़ाकारों के मुस्कुराते चेहरे, जलसा गाह में बग़ैर किसी को तकलीफ़ दिए आना जाना, यूं लगता था कि यह कोई आसमानी मख़्लूक़ हैं। ये सब देखकर लग रहा था कि आज अगर कोई जमाअत, इस्लाम का हवाला बन सकती है तो वह अहमदिया जमाअत ही है। कहते हैं मुझे दूसरे इस्लामी देशों के अतिरिक्त सऊदी अरब में भी बार बार जाने का संयोग हुआ है लेकिन मैं खुल कर कह रहा हूँ कि मुझे इस्लामी भाई चारे से भरपूर ऐसा माहौल कहीं मयस्सर नहीं आया। मुझे यह कहते हुए ज़रा भी संकोच नहीं कि तक़रीबन चालीस हज़ार के क़रीब लोगों को एक जगह इकट्ठा करना और फिर मुसलसल इस्लामी तालीमात का प्रचार करना और बग़ैर किसी झगड़े और भगदड़ के अल्लाह तआला के रसूल की मुहब्बत में ये दिन गुज़ारना अहमदिया जमाअत की ही विशेषता है। आख़िर पर माननीय सदर ने जलसा सालाना में शामिल होने वालों के लिए इस ज़माना के मामूर और मुर्सल हज़रत मसीह मौऊद और महदी माहूद अलैहिस्सलाम ने जो दुआएं की हैं वे पेश करके अपने ख़िताब को ख़त्म किया। इसके बाद नाअत नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तराना की शक्ल में माननीय मुर्शिद अहमद डार और उनके साथियों ने निहायत सुंदर आवाज़ से पेश किया।

आज जलसा सालाना के पहले इज्लास की पहली तक़रीर माननीय मौलाना मुहम्मद इनाम ग़ौरी साहिब नाज़िर आला वा अमीर मुक़ामी क़ादियान ने की। आपकी तक़रीर का अनुवान "सरबराहाने रियासत के लिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का उस्वः-ए-हसना" था।

इस इज्लास की दूसरी तक़रीर "सीरत सहाबा हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत मियां बशीर अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हो" के शीर्षक पर माननीय मुहम्मद शरीफ़ कौसर साहिब ने की। यह तक़रीर डाक्टर अब्दुल ख़ालिक़ साहिब सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह पाकिस्तान की थी जो माननीय मुहम्मद शरीफ़ कौसर साहिब अध्यापक जामिआ अहमदिया क़ादियान ने पढ़ कर सुनाई। इस तक़रीर के बाद बारह बजे इफ़्तिताही इज्लास समाप्त हुआ।

नमाज़-ए-जुमा

जलसा गाह में नमाज़-ए-जुमा के लिए पहली अज़ान 1 बजे हुई और ख़ुतबा 1:30 पर शुरू हुआ। नमाज़-ए-जुमा माननीय हाफ़िज़ मख़दूम शरीफ़ साहिब नायब नाज़िर आला ने पढ़ाया और ख़ुतबा में हुज़ूर अनवर के ख़ुतबा जुमा का ख़ुलासा वर्णन फ़रमाया।

पहला दिन दूसरा इज्लास

पहले दिन के दूसरे इज्लास की कार्रवाई दोपहर ठीक दो बजे शुरू हुई इस इज्लास की सदारत माननीय जलालुद्दीन नय्यर साहिब सदर मजलिस तहरीक-ए-जदीद क़ादियान ने फ़रमाई। माननीय मुर्शिद अहमद साहिब डार उस्ताज़ जामिआ अहमदिया क़ादियान ने सूरत अल् एराफ़ आयात 55 से 59 की तिलावत की और अनुवाद माननीय मौलवी सय्यद कलीमुद्दीन साहिब मर्कज़ी क़ाज़ी दारुल क़ज़ा क़ादियान ने तफ़सीर-ए-सग़ीर से पेश किया। इसके बाद माननीय نَصْرٌ مِّنَ اللهِ साहिब नायब नाज़िर उमूर-ए-आम्मा क़ादियान ने सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु के मंज़ूम कलाम

नोनेहालाने जमाअत मुझे कुछ कहना है
पर है यह शर्त कि ज़ाए मेरा पैग़ाम न हो

से चंद अशआर निहायत सुंदर आवाज़ के साथ सुनाए।

इस इज्लास में उल्मा की दो तक़रीरें हुईं। पहली तक़रीर माननीय मौलाना मुहम्मद करीमुद्दीन साहिब शाहिद सदर, सदर अंजुमन अहमदिया क़ादियान ने की। आपकी तक़रीर का शीर्षक "हस्ती बारी तआला क़बूलियत-ए-दुआ की रोशनी में" था ।

दूसरी तक़रीर माननीय के. तारिक़ अहमद साहिब सदर मजलिस ख़ुद्दामुल अहमदिया भारत ने "नई नसल की तर्बीयत और ख़िलाफ़त अहमदिया" के शीर्षक पर की। इसके बाद सदरे इज्लास की इजाज़त से पहले दिन का दूसरा इज्लास समाप्त हुआ।

तिथि 25 दिसंबर 2021 जलसे का दूसरा दिन

दूसरा दिन पहला इज्लास

दूसरे दिन के पहले इज्लास की कार्रवाई ठीक दस बजे शुरू हुई। इस इज्लास की सदारत माननीय शीराज़ अहमद साहिब नायब नाज़िर आला जुनूबी हिंद ने की। तिलावत क़ुरआन-ए-मजीद हाफ़िज़ फ़ारूक़ आज़म ने की। उन्होंने सूरत अल् बक़रा की आयात 262 से 265 की तिलावत की। इन आयात का अनुवाद माननीय मुहम्मद नस्र ग़ौरी साहिब नायब इंचार्ज नूरुल इस्लाम ने तफ़सीर -ए-सग़ीर हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो से सुनाया। इसके बाद नज़्म माननीय अब्दुल वासे मलकाना साहिब ने सुन्दर आवाज़ से सुनाई। आपने सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पवित्र कलाम "नूर-ए-फ़ुरक़ाँ है जो सब नूरों से अजला निकला" में से चंद अशआर निहायत सुन्दर आवाज़ से सुनाए। इसके बाद इस इज्लास में तीन तक़ारीरें उलमाए किराम ने कीं।

पहली तक़रीर माननीय अता इलाही अहसन ग़ौरी साहिब नाज़िम तामीरात ने की। आपकी तक़रीर का शीर्षक "सीरत हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम क़ुरआन-ए-मजीद से आप का इशक़ और ख़िदमत-ए-क़ुरआन" था।

इस इज्लास की दूसरी तक़रीर माननीय मौलाना रफ़ीक़ अहमद बेग़ साहिब नाज़िर बैतुल माल आमद ने की। आपकी तक़रीर का शीर्षक "माली क़ुर्बानी की एहमीयत सीरत सहाबा आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम" था।

इस इज्लास की तीसरी तक़रीर माननीय मौलाना मुहम्मद हमीद कौसर साहिब नाज़िर दावत इलाल्लाह शुमाली हिंद ने की। आपकी तक़रीर का शीर्षक "सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की मक़बूल दुआओं के ईमान अफ़रोज़ वाक़ियात" था।

दूसरा दिन दूसरा इज्लास

दूसरे दिन के दूसरे इज्लास की कार्रवाई का आग़ाज़ माननीय सय्यद तनवीर अहमद साहिब सदर मजलिस वक़्फ़-ए-जदीद की सदारत में हुआ। तिलावत माननीय अमीर अहमद अब्बास साहिब शिक्षक जामिआ अहमदिया क़ादियान ने की। उन्होंने सूरत

अल् सफ़ की आयात 7 से 10 की तिलावत की जिसका अनुवाद माननीय कमरुल हक़ ख़ान साहब ने पेश किया। इसके बाद एक नज़्म माननीय रिज़वान अहमद साहिब अध्यापक जामिआ अहमदिया क़ादियान ने सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के निमंलिखित मंजूम कलाम में से चंद अशआर निहायत सुन्दर आवाज़ में पेश किए।

हमें इस यार से तक़्वा अता है
न यह हम से कि एहसान-ए-ख़ुदा है

इसके बाद माननीय मौलाना मुनीर अहमद ख़ादिम साहिब ऐडीशनल नाज़िर इस्लाह अरु इरशाद जुनूबी हिंद ने "जमात अहमदिया की प्रगति हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की भविष्यवाणी की रोशनी में" की।

इसके बाद जलसा गाह में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का वह अंतिम ख़िताब हाज़िरीन को सुनाया गया जो हुज़ूर ने जलसा सालाना जर्मनी से 9 अक्तूबर 2021 को फ़रमाया था।

तिथि 26 दिसंबर 2021ई. जलसे का तीसरा दिन

तीसरा दिन पहला इज्लास

तीसरे दिन के पहले इज्लास की कार्रवाई का आग़ाज़ माननीय मौलाना मुहम्मद हमीद कौसर साहिब नाज़िर दावत इलल्लाह शुमाली हिंद की सदारत में हुआ। तिलावत-ए-कुरान-ए-करीम माननीय हाफ़िज़ सय्यार अहमद साहिब मुबल्लिग़ सिलसिला ने की। आप ने सूरत अल् निसा आयत 58 से 60 की तिलावत की। इन आयात का अनुवाद माननीय मौलवी मज़हर अहमद वसीम साहिब नायब अफ़्सर जलसा सालाना क़ादियान ने पेश किया। इसके बाद माननीय सईद अहमद मलिकाना साहिब मुरब्बी सिलसिला ने निहायत सुन्दर आवाज़ से हज़रत मसीह मौऊद अलैहि अस्सलाम के निमंलिखित मंजूम कलाम में से कुछ अशआर सुन्दर आवाज़ में से सुनाए।

क्यों अजब करते हो गर मैं आ गया हो कर मसीह
ख़ुद मसीहाई का दम भर्ती है यह बाद-ए-बहार

इसके बाद इस इज्लास की पहली तक़रीर माननीय जावेद अहमद लोन साहिब नाज़िर दीवान सदर अंजुमन अहमदिया क़ादियान ने की। आपकी तक़रीर का शीर्षक "हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की तिबशीरी व अनज़ारी भविष्यवाणी वर्तमान समय से" था।

इस इज्लास की दूसरी तक़रीर माननीय शीराज़ अहमद साहिब ऐडीशनल नाज़िर आला जुनूबी हिंद ने की। आपकी तक़रीर का शीर्षक "मौजूदा ज़राए इबलाग़ और दावत इलल्लाह" था।

इस इज्लास की तीसरी तक़रीर माननीय हाफ़िज़ मख़दूम शरीफ़ साहिब नायब नाज़िर आला व नाज़र नश्र व् इशात क़ादियान ने "कुतुब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम, ख़लिफ़ा-ए-किराम और जमाअती अख़बारात और पत्रिकाओं के अध्यन की एहमीयत" के अनवान पर की। इसके साथ ही तीसरे रोज़ का पहला इज्लास समाप्त हुआ।

अंतिम इज्लास और हुज़ूर अनवर का ज्ञानवर्धक भाषण

आज जलसा सालाना क़ादियान का अंतिम दिन और अंतिम इज्लास था। इस अंतिम इज्लास से सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल ने ख़िताब फ़रमाना था। जलसा गाह में हाज़िरीन ख़ामोशी के साथ बैठे हुए हुज़ूर अनवर के ख़िताब की प्रतीक्षा कर रहे थे। हुज़ूर अनवर के ख़िताब से पूर्व एम.टी.ए. स्टूडियो लंदन से क़ादियान दारुल आमान की मुक़द्दस बस्ती और जलसा सालाना क़ादियान के सम्बंधित एक ख़ूबसूरत डाकूमैंटरी दिखाई गई। यह जलसा उस वक़्त एक आलमी जलसा की सूरत इख़्तियार कर गया जब अमीरुल मोमिनीन हज़रत ख़लीफ़ ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की बाबरकत सदारत में ऐवान-ए-मसरूर, इस्लामाबाद से m.t.a के संचारके सम्पर्कों के माध्यम से इस जलसा की अंतिम कार्रवाई पूरी दुनिया में बराह-ए-रास्त प्रकाशित की गई। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ हिन्दुस्तानी वक़्त के अनुसार 4 बजे ऐवान-ए-मसरूर, इस्लामाबाद में रौनक अफ़रोज़ हुए। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने समस्त शामिल होने वालों को अस्सलामु अलैकुम का तोहफ़ा पेश फ़रमाया। इज्लास का बाक़ायदा आग़ाज़ तिलावत-ए-क़ुरआन-ए-करीम से हुआ जिस का सोभाग्य माननीय महमूद अहमद वर्दी साहिब को हासिल हुई। आपने सुरः आले इमरान आयात 20 से 23 की तिलावत की और उनका उर्दू अनुवाद पेश किया। इसके बाद माननीय उम्र शरीफ़ साहिब ने हज़रत-ए-अक़्दस मसीह मौऊद अलैहि अलैहिस्सलाम की नज़्म

इस्लाम से ना भागो राह्-ए-हुदा यही है
हे सोने वालो जागो शम्सुल ज़ुहा यही है

के कुछ अशआर निहायत ख़ुश-अल्हानी से सुनाए।

तक़रीबन सवा चार बजे जलसा सालाना क़ादियान का वह मुबारक लम्हा आया जब क़ादियान और यू.के से बुलंद होने वाले पुर जोश नारों के बाद हज़रत ख़लीफ़ ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने ख़िताब का आरम्भ फ़रमाया। तशहुहुद, ताव्वुज़ और सूरत फ़ातिहा की तिलावत के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :

आज क़ादियान के जलसा सालाना का अंतिम सैशन है। इसी तरह अफ़्रीक़ा के एक मुल्क गिनी बसाऊ में भी जलसा हो रहा है। उन्होंने भी निवेदन किया था कि हमें भी शामिल कर लें। अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से और भी मुल्क हैं जहां जलसे होंगे और हो रहे हैं। बहरहाल क़ादियान के जलसे के साथ क्योंकि उनका जलसा भी था इसलिए उनका वर्णन हो गया है।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि हम यह दावा करते हैं कि इस्लाम की तालीम ही अपनी असली हालत में होने की वजह से वह तालीम है जो ख़ूबसूरत समाज क़ायम करने के लीए उच्च तालीम है। यही वह तालीम है कि अगर इस पर अमल किया जाए तो ख़ुदा तआला के क़रीब भी करती है और फिर उसके प्रेम का कारण और ख़ुदा तआला की प्रसन्नता हासिल करने की ख़ाहिश और कोशिश की वजह से एक हक़ीक़ी मुस्लमान को एक दूसरे के हुक़ूक़ अदा करने की तरफ़ ऐसा मार्गदर्शन करती है जो बेमिसाल है। यह हुक़ूक़ की अदायगी जो मुआशरे के अमन-ओ-सलामती की भी ज़मानत है। आजकल अमन-ओ-सलामती की बातें होती हैं कि किस तरह अमन-ओ-सलामती पैदा की जाए।

*हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कोविड की महामारी ने दिलों के द्वेष दूर नहीं किए। अल्लाह तआला की इस वार्निंग से इन्सान कोई सबक़ हासिल नहीं कर रहा। अगर यही रवैय्या रहा तो बड़े ख़तरनाक परिणाम पैदा होंगे : आज मैं इस्लाम की अमन की तालीम के कुछ पहलू वर्णन करूँगा अगर उन पर अमल हो तो दुनिया अमन-ओ-सलामती का बाग़ बन सकती है।

* हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि जबकि दुनिया मज़हब से दूर हो रही है लेकिन फिर भी एक ऐसा वर्ग है जो मज़हब के हवाले से दूसरे मज़हब को एतराज़ का निशाना बनाता है। इस्लाम कहता है कि एक दूसरे के मज़हब के संस्थापक को ग़लत कह कर इस पर इल्ज़ाम न लगाओ। इस्लाम यह कहता है कि इस्लाम अंतिम मज़हब है लेकिन यह नहीं कहता है कि बाक़ी मज़हब झूठे थे। इस्लाम कहता है कि हर क़ौम में नबी आए। क़ुरआन-ए-करीम की आयत وَاِنۡ مِّنۡ اُمَّۃٍ اِلَّا خَلَا فِیۡہَا نَذِیۡرٌ की रोशनी में एक मुस्लमान हज़रत-ए-ईसा अलैहिस्सलाम को हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को या हिंदूओं के अवतारों को सम्मान की निगाह से देखेंगे।

* हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि हर क़ौम में नबी आए हैं और आरम्भ में समस्त धर्मों की बुनियाद हक़ और रास्ती पर थी परन्तु मुरूर-ए-ज़माना के बायस उनकी तालीमात में तबदीली आ गई। ख़ुदा का फ़ैज़े आम है जो समस्त क़ौमों, समस्त मुल्कों और समस्त ज़मानों पर मुहीत है ता कोई क़ौम या ज़माना बेनसीब न ठहरे। अतः इस्लाम कहता है कि हर मज़हब के मानने वाले का सम्मान करो और हर मज़हब के संस्थापकों का सम्मान करो।

* इस्लाम के बारे में एक ग़लत तसव्वुर क़ायम किया गया है कि इस्लाम शिद्दत-पसंद मज़हब है और इबतिदा में ज़बरदस्ती मुस्लमान बनाए गए हालाँकि इस्लाम उसकी नफ़ी करता है जैसा फ़रमाया : وَلَوۡ شَآءَ رَبُّکَ لَاٰمَنَ مَنۡ فِی الۡاَرۡضِ کُلُّہُمۡ جَمِیۡعًا اَفَاَنۡتَ تُکۡرِہُ النَّاسَ حَتّٰی یَکُوۡنُوۡا مُؤۡمِنِیۡنَ ○ (यूनुस100)

* हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि इस्लाम में तब्लीग़ का हुक्म है, पैग़ाम पहुंचाने का और रास्ता दिखाने का हुक्म है। इस के बाद हुक्म है कि قُلِ الۡحَقُّ مِنۡ رَّبِّکُمۡ ۟ فَمَنۡ شَآءَ فَلۡیُؤۡمِنۡ وَّمَنۡ شَآءَ فَلۡیَکۡفُرۡ (अल् कहफ़ : 30) अतः इस्लाम ने इस दुनिया में न मानने की वजह किसी को सज़ा नहीं दी। अगर आज भी मुस्लमानों के अमल उस तालीम के अनुसार हो जाएं तो दुनिया की इस्लाम की तरफ़ तवज्जा पैदा हो जाए और दुनिया भी देखे कि इस से जहां दुनिया में अमन क़ायम होगा वहां मुस्लमानों की साख भी क़ायम हो जाएगी।

* फिर दुनिया में अमन क़ायम करने के लिए एक उसूल यह बताया कि किसी ग़लती या दुश्मनी पर माफ़ करना या सज़ा देना है। अल्लाह तआला क़ुरआन-ए-करीम में फ़रमाता है

وَجَزٰٓؤُا سَیِّئَۃٍ سَیِّئَۃٌ مِّثۡلُہَا ۚ فَمَنۡ عَفَا وَاَصۡلَحَ فَاَجۡرُہٗ عَلَی اللّٰہِ ؕ اِنَّہٗ لَا یُحِبُّ الظّٰلِمِیۡنَ ○ (अल् शूरा : 41) अर्थात इस्लाह मद्द-ए-नज़र होनी चाहिए। देखना चाहिए कि आया सज़ा देने से इस्लाह होती है या माफ़ करने से। उद्देश्य इस्लाह होनी चाहिए।

* हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि अमन क़ायम रखने के लिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हमें यह एक सुनहरी उसूल बताया कि ज़ालिम और मज़लूम दोनों से हमदर्दी करो। और फ़रमाया कि ज़ालिम को ज़ुलम से रोक कर इस से हमदर्दी करो। इस चीज़ में बहुत कमी नज़र आती है। अतः सदेव रहें वाला अमन उस वक़्त क़ायम हो सकता है जब संतुलित रवैय्या हर वर्ग के बाअख़्तियार लोग अपनाएं।

* फिर एक बुराई जिससे इस्लाम बड़ी सख़्ती से रोकता है वह बदज़नी है। अल्लाह तआला फ़रमाता है कि हे लोगो जो ईमान लाए हो ज़न से बकसरत इजतिनाब किया करो। निसंदेह कुछ ज़न गुनाह होते हैं। और तजस्सुस न किया करो। और तुम में से कोई किसी दूसरे की ग़ीबत न करे। क्या तुम में से कोई यह पसंद करता है कि अपने मुर्दा भाई का गोश्त खाए? अतः तुम इस से सख़्त कराहत करते हो। और अल्लाह का तक़्वा इख़्तियार करो। निसंदेह अल्लाह बहुत तौबा क़बूल करने वाला (और) बार-बार रहम करने वाला है।

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553

Weekly **BADAR** Qadian

Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA

POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 7 Thursday 17 February 2022 Issue No.7

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 575/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

* हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं : कुछ गुनाह ऐसे बारीक होते हैं कि इन्सान उनमें ग्रस्त होता है और समझता ही नहीं। जो उनसे बूढ़ा हो जाता है परन्तु उसे पता नहीं लगता कि गुनाह करता है उदाहरणतः शिकवा करने की आदत होती है, ऐसे लोग इस को बिल्कुल एक मामूली और छोटी सी बात समझते हैं। हालाँकि कुरआन शरीफ़ में इस को बहुत ही बुरा क़रार दिया है।

* हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया لَا تَاْكُلُوْٓا اَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ अर्थात और अपने ही अम्वाल अपने मध्य झूठ फ़रेब के द्वारा न खाया करो। फ़रमाया यह ज़ुलम है। इस से फिर रंजिशें और झगड़े पैदा होते हैं। हम देखते हैं कि समाज में जबकि भोतिकवाद की दौड़ बहुत ज़्यादा हो चुकी है ग़लत रंग में धोखा देकर एक दूसरे का माल खाने की कोशिश की जाती है बल्कि विश्वव्यापी सतह पर भी यह ज़ुलम हो रहा है। अमीर देश ग़रीब देशों की दौलत ग़लत रंग में मुख़्तलिफ़ बहानों से खा रहे हैं।

* हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया फिर हम देखते हैं कि कुछ व्यापार ज़ुलम का माध्यम बन जाते हैं। छोटी सतह पर भी और बड़ी तिजारतों की शक्ल में भी।इसलिए अल्लाह तआला फ़रमाता है وَيْلٌ لِّلْمُطَفِّفِيْنَ ○ الَّذِيْنَ اِذَا اكْتَالُوْا عَلَى النَّاسِ يَسْتَوْفُوْنَ ○ अर्थात हलाकत है तौल में नाइंसाफ़ी करने वालों के लिए अर्थात वे लोग कि जब वे लोगों से तौल लेते हैं भरपूर (पैमानों के साथ) लेते हैं। इस्लाम कहता है कि हर किस्म के लेन-देन में दूसरे के हुक़ूक़ का ख़्याल रखों।

* हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि अमन-ओ-सलामती को बर्बाद करने में तकब्बुर एक बहुत बड़ी वजह है। इस्लाम उसको सख़्ती से रोकता है। अल्लाह तआला फ़रमाता है وَلَا تَمْشِ فِي الْاَرْضِ مَرَحًا ۚ اِنَّكَ لَنْ تَخْرِقَ الْاَرْضَ وَلَنْ تَبْلُغَ الْجِبَالَ طُوْلًا ○ अर्थात और ज़मीन में अकड़ कर न चल तू निसंदेह ज़मीन को फाड़ नहीं सकता और न ऊंचाई में पहाड़ों की बुलंदी तक पहुंच सकता है। अल्लाह तआला फ़रमाता है कि तकब्बुर न करो और इर्दगिर्द के लोगों को ज़लील, हक़ीर न समझो। तकब्बुर करके कोई हक़ीक़ी मुक़ाम नहीं मिलता। आजिज़ी ही है जो हक़ीक़ी सरदारी देती है और लीडर बनाती है। यही सरदारी है जो देर पे अमन क़ायम करने वाली बन सकती है।

* وَاعْبُدُوا اللّٰهَ وَلَا تُشْرِكُوْا بِهٖ شَيْـًٔا وَّبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا وَّبِذِى الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَالْجَارِ ذِى الْقُرْبٰى وَالْجَارِ الْجُنُبِ وَالصَّاحِبِ بِالْجَنْۢبِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ۙ وَمَا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ ۗ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ مَنْ كَانَ مُخْتَالًا فَخُوْرًا ○

(अल् निसा : 37)

और अल्लाह की इबादत करो और किसी चीज़ को इस का शरीक न ठहराओं और माता पिता के साथ एहसान करो और क़रीबी रिश्तेदारों से भी और यतीमों से भी और मिस्कीन लोगों से भी और रिश्तेदार हमसायों से भी और ग़ैर रिश्ता दार हमसायों से भी और अपने साथ बैठने वालों से भी और मुसाफ़िरों से भी और उनसे भी जिनके तुम्हारे दाहने हाथ मालिक हुए। निसंदेह अल्लाह उसको पसंद नहीं करता जो मुतकब्बिर (और) शेख़ी बघारने वाला हो। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि इन्सान उसके अनुसार अगर इन्सान ज़िंदगी गुज़ारे तो अमन बर्बाद करने वाले समस्त अस्बाब का ख़ातमा हो जाएगा। समाज में के समस्त लोग जिन से वास्ता पड़ता है इस में आ जाते हैं।

* ग़ुस्से के हवाले से हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि ग़ुस्से से झगड़े शुरू होते हैं। फ़रमाया कि अक़्ल और जोश में ख़तरनाक दुश्मनी है। जो व्यक्ति ग़ज़ब में आ जाता है उसकी ज़बान से हिक्मत और मार्फ़त की बातें कदापि नहीं निकल सकतीं।

* सूरः नहल की आयत 91 की रोशनी में हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया पहला स्थान इन्साफ का है। आपस में अदल का मामला करो। दूसरा दर्जा एहसान का है। इस में क्षमा, दोष देखकर उसे अनदेखा कर देना, ग़रीब की मदद, सदक़ा, ख़ैरात समस्त चीज़ें आ जाती हैं। इस से बढ़कर एक दर्जा ايتاءِ ذی القربیٰ है जहां रिश्तेदारों जैसा सुलूक हो जहां कोई ज़ाती उद्देश्य न हो जैसे एक माँ अपने बच्चों से मुहब्बत करती है।

* हुज़ूर अनवर फ़रमाया : अल्लाह तआला हमें हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मानने के बाद इस्लाम की हक़ीक़ी तालीम पर अमल करते हुए दुनिया के लिए अपने हर अमल में नमूना क़ायम करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। अमन के हवाले से जो कुछ बातें मैंने वर्णन की हैं उन पर हम लोग ख़ुद हक़ीक़ी रंग में अमल करने वाले हों। दुनिया को इस से अवगत करेंकि दुनिया अपने स्वार्थ की प्राप्ति की वजह से तबाही के घड़े की तरफ़ जा रही है, हक़ीक़ी अमन ख़ुदा तआला के हुक्मों पर चल कर ही क़ायम हो सकता है और कोई दुनियावी निज़ाम उसके पाएदार क़ियाम में मददगार नहीं हो सकता। अतः यह बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी है हर अहमदी की। अल्लाह तआला हमें इस पर अमल करने की तौफ़ीक़ दे। जलसे की बरकात को भी शामिल होने वाले साथ लेकर जाने वाले हों। दुनिया में हर जगह इस जलसे के प्रोग्राम को सुनने वाले एक जोश और जज़बा अपने अंदर पैदा करने वाले हों। और अपने इलाक़ों में इस्लाम की पाक तालीम की रोशनी में एक इन्क़िलाब पैदा करने वाले बन जाएं। सब शामिल होने वालों को अल्लाह तआला ख़ैरीयत से अपने घरों को लेकर जाए। क़ादियान में जो आए हुए हैं वह भी, जो अफ़्रीक़ा में गिनी बसाऊ में हैं वे भी। अल्लाह तआला सबको अपनी हिफ़ाज़त में रखे।

* अब हम दुआ करेंगे। विशेषतः यह दुआ करें कि अल्लाह तआला जमाअत को हर शर से महफ़ूज़ रखे और हमें हक़ीक़ी रंग में वे हक़ अदा करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए जो एक बैअत का हक़ है, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जो हमसे आशा की है। अब दुआ कर लें। (शेष आगे)

★ ★ ★

पृष्ठ01 का शेष

हालाँकि ख़ुदा होने के लिए स्रष्टा होना ज़रूरी है, क्योंकि कामिल वजूद ही माबूद हो सकता है।

(2) वे ख़ुद पैदा किए गए हैं, अर्थात उनमें दूसरी वस्तुओं के लिए सावधानी रखना पाया जाता है और और दूसरी वस्तुओं पर निर्भरता दोषपूर्ण होता है, उपास्य नहीं हो सकता।

(3) वे मुर्दा हैं, ज़िंदा नहीं, अर्थात इस ज़माना में वे बे नफ़ा और बे जर्र हैं, और ख़ुदा वही हो सकता है जो हमेशा नफ़ा और ज़रर की ताक़त रखता हो।

(4) उन्हें ये भी मालूम नहीं कि वे कब उठाए जाऐंगे, मानों उनका अंजाम भी दूसरे के हाथ में है। इस आख़िरी दलील के सम्बन्ध में कहा जा सकता है कि इस का क्या सबूत है कि उन्हें ज्ञान नहीं कि वे कब उठाए जाऐंगे, अतः इस का उत्तर यह है कि सबसे ज़्यादा पूजा जाने वाला वजूद हज़रत मसीह का है, वह देहांत वाले दिन के सम्बन्ध में स्वयं कहते हैं कि

"लेकिन उस दिन या उस घड़ी की बाबत कोई नहीं जानता, न आसमान के फ़रिश्ते न बेटा, परन्तु बाप। ख़बरदार! जागते और दुआ मांगते रहो क्योंकि तुम नहीं जानते कि वह वक़्त कब आएगा।" (मरकस, बाब 13,32,33)

अतः हज़रत-ए-अलैहिस्सलाम के इस इक़रार पर बाक़ी ख़ुदा माने जाने वाले इन्सानों के सम्बन्ध में भी क़ियास किया जा सकता है।

(तफ़सीर-ए-कबीर, भाग 4, पृष्ठ 151 मुद्रित 2010 क़ादियान)

★ ★ ★

Z.A. Tahir Khan
M.Sc. (Chemistry) B.Ed.
DIRECTOR

طالب دعا

Z.A.TAHIR KHAN
Director oxford N.T.T.College
Jaipur (Rajasthan)
TEACHER TRAINING

OXFORD N.T.T. COLLEGE
(Teacher Training)
(A unit of Oxford Group of Education)
Affialiated by A.I.I.C.C.E. New Delhi 110001

0141-2615111- 7357615111
oxfordnttcollege@gmail.com
Add. Fateh Tiba Adarsh Nagar, Jaipur-04
Reg. No. AllCCE-0289/Raj.

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad